हासबिलास।

(हंसी दिल्लगी, पंच, चोज, प्रहसन आदि का
एक अपूर्व संग्रह।)

प्रथम भाग।

गुरु गनपति अवधेस पुनि, सुमिरि उदयपुर धीस।
हासबिलासहि रचत हौं, धरि रसिकन पद सीस॥
मैं बालक सब भांति से, तोहि सब लायक जानि।
श्री सज्जन महराज को, करो समर्प्पण आनि॥

श्री मन्महाराजाधिराज महिमहेन्द्र यावदार्य कुल कमल
दिवाकर श्रीमदेक लिंगावतार विविध बिरदावली
बंदित १०८ श्री मन्ममहाराणा सज्जन सिंह देव
बहादुर जी० सी० एस० आई० के लिये

रामचरित्र सिंह ने
संग्रह किया।

"खड्गविलास" प्रेस बांकीपुर
बाबू साहिबप्रसाद सिंह ने छापकर प्रकाशित किया।
१८८७

-57

समर्पण ।

१०८ युत महाराजाधिराज श्रीमहाराणा सज्जन
देव बहादुर जी० पी० सी० एस० आई० समीपेषु ।

करुणानिधि मैं आप को किस प्रकार से रिझा सकता
हूं आप के यहां बड़े बड़े गुणी गण का समूह है वे लोग
एक से एक बड़े हैं मैं तो एक क्षुद्र हूं फिर मेरे गुण का व
हां कौन काम । मेरी गणना क्या । अच्छा मैं इस लिये इस
को आप को समर्पण करता हूं कि हास रस के मिस से भी
तो मेरा पहुंच वहां हो फिर देखा जायगा । अच्छा आज
हास ही के मिस से इस दिन जन पर कृपा कटाक्ष हो ।

तारणपुर जिला पटना,
डाकघर डुमरी } रामचरित्र सिंह ।

समर्पण ।

श्री १०८ युत महाराणाधिराज श्रीमहाराणा सज्जन सिंह देव बहादुर जी० सी० एस० आई० समीपेषु ।

करुणानिधि मैं आप को किस प्रकार से रिझा सकता हूं आप के यहां बड़े बड़े गुणी गण का समूह है वे लोग एक से एक बड़े हैं मैं तो एक क्षुद्र हूं फिर मेरे गुण का वहां कौन काम । मेरी गणना क्या । अच्छा मैं इस लिये इस को आप को समर्पण करता हूं कि हास रस के मिस से भी तो मेरा पहुंच वहां हो फिर देखा जायगा । अच्छा आज हास ही के मिस से इस दिन जन पर कृपा कटाक्ष हो ।

तारणपुर जिला पटना,
डाकघर डुमरी
} रामचरित्र सिंह ।

भूमिका।

मैं अंतःकरण से धन्य वाद महाराजकुमार बाबू रामदीन सिंह स० प० सम्पादक को देता हूं। जिनकी आशा से यह पुस्तक निर्माण हुई तदनन्तर भारत भूषणभारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र को क्योंकि जो जो बातें इस में लिखी हैं बहुत से उन्हीं के लेख हैं। इन के सिवाय काशीपत्रिका, बिहारबन्धु कबिबचनसुधा, सारसुधानिधि, हिन्दीप्रदीप, हरिश्चन्द्रचन्द्रिका, विद्यार्थी, मोहनचन्द्रिका, बालाबोधिनी, जयपुरगज़ट, सज्जनकीर्तिसुधाकर, भारतबन्धु, भारतमित्र उचितवक्ता, आर्य्यमित्र, आनन्दकादम्बिनी, बनारसअखबार, विद्याबिनोद, मोतीचूर, प्रयागसमाचार, मित्रबिलास, भारतीबिलास, बैष्णवपत्रिका आदि के संपादक लोग भी धन्यवाद के भागी हैं क्योंकि इन अखबारों से मुझे बहुत कुछ सहायता मिली है।

इस में हासरस की जो जो बातें लिखी गई हैं वे सब कुछ हंसी की हो नहीं हैं किन्तु चतुराई से भरी हैं, फिर इस की बोली भी एक ढङ्ग पर नहीं है। जैसी जहां पायी वैसी ही लिख दी हैं जिस से सब को सुभीता हो। हास्य रस प्रिय जनों के तो अवश्य यह पुस्तक प्रिय लगनी चाहिये अगर यह बात न हो तो केवल मेरी मूर्खता है। अच्छा जो कुछ हो एक बार आद्योपांत देख तो जाइये कि कैसी है फिर जैसी आप को मालूम हो वैसीही सही।

आप लोगों का कृपाभिलाषी।

हासविलास।

"रामकलेवा" रामनाथ प्रधान कृत से।

दोहा।

राज भौन में चैनजुत, राजत राजकुमार।
जिनको हास बिलास लखि, लाजत लाखन मार॥ १॥

चौपाया छन्द।

तेही अवसर सुधि पाय सखी मुख, लक्ष्मीनिधि की नारी।
नाम सिद्धी प्रसिद्ध जासु गुन, रूप सील उजियारी॥ १॥
भाग सुहाग भरी सुठि सुन्दरी, नौ जोबन मतवारी।
रसिक न रीति प्रीति परबीनी, रतिहि लजावनिहारी॥२॥
अति गुनवान निधान रूप की, सब बिधि सुभग सयानी।
लछमी निधि की प्रान पियारी, निमि कुल की महारानी॥३॥
अलबेली सरहज रघुबर की, बड़ी सनेह सिंगारी।
प्रीतम प्रीति निवाहन वारी, राम रूप रिझिवारी॥ ४॥
चंचल चखन चहूँकित चितवत, देखन की अतुराई।
भरी उमंग संग सखियन लै, तुरत राम ढिग आई॥ ५॥
बदन चन्द अरबिन्द लियेकर, बिहसत मन्द रसौंहैं।
राम कुंवर कर पकड़ी लाड़िली, बोली तकि तिरछौहैं॥ ६॥
ये चित चोर किसोर भूप के, बड़े चोर तुम प्यारे।
सुरति हमार भुलाय सांवरे, सासु समीप सिधारे॥ ७॥
उलटी बात कही जनि प्यारी, आपन दोष दुराई।
तुमहीं रहेउ छिपाय छबीली, सुनत हमरी भआई॥ ८॥

भलो सदन तुमरो है प्यारी, जहां सब जात समाई । ९ ॥
सुनत राम के वचन लाडिलो, बोली मृदु मुसुकाई ।
तुम्हरे घरको रीति लालजी, इहां न चलि चलाई ॥ १० ॥
सासु सुनैना के समीप महं, देत जवाब बनैना ।
पाणि पकरि रघुनन्दनजी को, गये लेवाय निज ऐना ॥ ११ ॥
चारि सिंहासन दै तहां आसन, भरी हुलासन प्यारी ।
बारहिबार निहारी बदन छवि, बहु आरती उतारी ॥१२॥
मेलि सुकंठ मालती माला, बसननि अतर लगायो ।
अंचल सों मुख पोंछि राम को, निजकर पान खवायो ॥ १३ ॥
जहां चन्द्रिका समान चांदनी, चहुंओर बिछी बिसाले ।
चमके बहु चित राम धामके, दमके मणिन दिवाले ॥ १४ ॥
जहां रति रंभा सरिस सुन्दरी, बैठि कियो सिंगारे ।
कोउ कुसुमन को करन फूलरचि, कोउ कलगी कोउ हारे ।१५।
ललित लवंग कपूर संग धरि, कोउ सखि पान लगावै ।
कोउ कर पीकदान लिये ठाढि, कोउ सखि चमर चलावै ॥१६॥
कोउ जल सीतल भरे सुराही, कोउ दरपन दरसावै ।
निज २ साज सजे सब प्यारी, रघुवर सन्मुख आवै ॥ १७ ॥
कोउ जलतार गितार तमूरा, कोउ करतार बजावै ।
कोउ सितार लै तार तार प्रति, गूढ़ गतिन दरसावै ॥ १८ ॥
कोउ उपंग मुरचंग मिलावै, दै मृदंग मुख थापे ।
कोउ लै बीन नवीन सुरन ते, मनहु बसी कर जापे । १९ ॥
कोउ मृगनैनी कोकिल बैनी, पंचम राग अलापैं ।
परत कान में मधुर तान जिन, विरहीन के जिय कापें ।२०।
गये कितान मान दै कोइ, तान वितानन छावै ॥
[illegible] ॥ २१ ॥

इमि अभिराम धाम सोभा लखि, राज कुंवर अनुरागी ।
बातें करत सिख सरहज सों, परम प्रेम रस पागी ॥ २२ ॥
जे मिथिराज नेवतसुनि आई, कोटिन राज कुमारी ।
राम मिलन की बढ़ि लालसा, कहिन सकै सुकुमारी ॥ २३ ॥
अति निरदुखन भूषित भूषन, कंचन कैसी बेली ।
रूप सील गुन धाम रंगीली, राज कुंअरि अलबेली ॥ २४ ॥
जानहिं प्रीति रीति की बातैं, सैली कुसल नवेली ।
जिनजोहतमुनिजनमनमोहत, मनहु मदन की चेली ॥ २५ ॥
तिन यहसुन्यौकि सिख महल में, आये वारिज भाई ।
तुरित तहैं पहुंची सब प्यारी, जानि समै सुखदाई ॥ २६ ॥
देख्यौ राज कुंवरी सब आई, राम दरस की प्यासी ।
अति सनमान कियौ सबही को, सिद्धि सहज सुख रासी ॥२७॥
राम सुछबि देखन ते लागीं, दृग आनन जल बाढ़े ।
अखभख परे रूप सागर में, कढहि नहिं अब काढ़े ॥२८॥
मनिन मौर पर मोतिन कलंगी, अलबेली अति सोहैं ।
राज तियन की कौन चली है, मुनि तिय की मन मोहैं ॥२९॥
पीत पोसाक करन कल कंकन, बंकन चितवन जोहैं ।
जोगी जती सती व्रत धारी, सबही को जिय मोहैं ॥ ३० ॥
अनियारे कारे कजरारे, बांके नैन रिझौहैं ।
रहत न ताके निपट कजाके, मार करत तिरछौहै ॥ ३१ ॥
चिक्कन चिलकदार अति कारी, अलकैं मुख पर छूटी ।
जोहत जहर चढ़त जुवतिन को, जड़ी न लागत बूटी ॥ ३२ ॥
पान खात अधरन पर लाली, मुख पर प्रभा पसारैं ।
मनहु निकासी मदन म्यानतें, सान धरि तरवारैं ॥ ३३ ॥
झीन सुजामा अतिअभिरामा, स्याम गात छबि छाये ।

रीझी दामनी जनुघन ऊपर, अपनो छटनि छपाये ॥ ३४ ॥
मंदहंसनीजियफसनीलालकी, मोह सनि गरवीली ।
सुधिन रहततनभसनबसनकी, जोवन रंग रसोली ॥ ३५ ॥
दूलहमूरति की बनी मूरति, काहलो करो बखानी ।
फिरिन दृगन तर आवत कोई, जयति छबी दरसानी ॥ ३६ ॥
लखिछबिवरकी स्यामसुन्दरकी, भई मीन मुख सरकी ।
तरकी तनी कंचुकी दरकी, चूरी करकी करकी । ॥ ३७ ॥
दो० मन लोभा सोभा निरखी, भई बिवस सुकुमारि
चकित छकित सब रहि गई, तन मन दसा बिसारि ॥ १ ॥

चौपाया छन्द ।

जो तिय मानि अनूपरूप निज, रही सरूप गुमानी ।
ते लखिरामबदन की सुखमा, बिन ही मोल बिकानी ॥ ३८ ॥
जे निज दृगमृगती सुन्दरगुनि, रही गरब के भारें ।
छेदि गई ते राम कटाचे, घायल आसुन ढारें ॥ २ ॥
जे अबला अबम्ब वेद लै, सदा पतिव्रत पालें ॥ ३ ॥
ते बेधी मनसिज के बानन, व्याकुल फिरहिं बिहालें ॥ ३ ॥
रघुनंदन अलबेलो छैला, नैन सैन जेहि मारी ।
तेहि सुधि रहै न काम धाम की, फिरहि मैन मतवारी ॥ ४ ॥
अति सुकुमारी राजकुमारी, सिद्धि सहित अनुरागी ।
तहं प्यारी गारी रघुवर से, देन दिवावन लागी ॥ ५ ॥
एक सखी कह सुनहु लालजी, यह सरूप कहां पायो ।
कानन सुन्यो काम पति सुन्दर, को तुम को सोई जायो ॥ ६ ॥
बोली सिद्धि सुनहु रघुनंदन, तुम हमार ननदोई ।
एक बात तुमसों हम पूछत, लालन राखहु गोई ॥ ७ ॥

होत ब्याह सनबन्ध सबनको, अपनें जातिहि माहीं।
निज बहिनी शृंगी ऋषि को तुम, कैसे दियो बिवाही ॥ ८ ॥
की उनको मुनीस ले भागी, की वोहू संग लागो।
एतो बात बतावहु लालन, तुम रघुवंस अदागी ॥ ९ ॥
लखनकह्योयहसुनहुलाड़िली, जेहिविधिजहांलिखदीन्हा।
तहँ संजोग होत है ताको, ब्याह तो कर्म अधीना ॥ १० ॥
कहं हम राजकुंवर रघुवंसी, कहं विदेह बैरागी॥
भयो हमार ब्याह तुम्हरे घर, बिधिगतिगुनै को भागी ॥ ११ ॥
औरो एक हंसी उर आवे, अचरज है सब काहू।
तुम तो सिद्धि वे लक्ष्मीनिधि, नारिनारि सों भव व्याहू ॥ १२ ॥
एक सखीकहसुनियेलालन, तुमहि सकै को जीति।
जाहिर भई सकल जग माही, तुम्हरे घर की रीति ॥ १३ ॥
अतिउदारकरतूतिदार सब, अवध पूरी की बामा।
खीर खाय पैदासुत करती, पति कर कछुन कामा ॥ १४ ॥
सखी बचन सुनते रघुनंदन, बोले मृदु मुसुकातें।
आपन चाल छपावहु प्यारी, कहहु आनको बातें ॥ १५ ॥
कोउनहिंउपजेमातुपिताबिनु, बन्धी बेद की नीति।
तुम्हरे तो महि ते सब उपजैं, अस हमरे नहिं रीति ॥ १६ ॥
बोली चन्द्रकला तेहि अवसर, परम चतुर सुकुमारी।
सिद्धिकुंवरिकी लहुरीभगिनी, लक्ष्मी निधिकी सारी ॥ १७ ॥
लरिकाई तें रह्यो लाल जी, तुम तपसिनसंग माहीं।
ये छल छन्द फन्द कहां पाये, सत्य कहो हम पाहीं ॥ १८ ॥
की मुनिनारिन के संग सीखे, की निज भगिनी पासें।
मीठी मीठो स्वाद लाल जी, बिनु चीखें नहिं भासें ॥ १९ ॥

बोले भरत भलो कहं सजनी, तुमहुतो अबै कुमारी ।
बरनो पुरुष संग को बातें, सो कहां सीखेहु प्यारी ॥२०॥
रहैमुनिन संगज्ञानसिखनको, सो सब सुने सुनाये ।
कामिनिकामकलाअब सीखन, हम तुम्हरे ढिग आये ॥२१॥
सिखि कह्योतबसुनहुभरतजो, ऐसे तुमन बखानो ।
तुम्हरी तो गिनती साधुन में, लोक बात का जानो ॥ २२ ॥
भरतकह्योतुमसांचिकहतहो, हम साधु पर काजी ।
ऐसो सेवा करहु लाडिलो, जामें होय हम राजी ॥ २३ ॥
आए अएन अपूरब लोगो, असनिजमनगुनिलीजै ।
अधर सुधा रस को दै भोजन, अतिथै पूजन कीजै ॥ २४ ॥
एक सखीकहै सुनहु सबैमिलि, इनकी एकु बड़ाई ।
ऋषि मखराखन गयेकुंवरये, तहं हम अस सुधिपाई ॥ २५ ॥
इनकहंसुन्दरदेखिकामबस, तिया ताड़िका आई ।
सो करतूति न भई बाल सो, मारे तेहि खिसिआई ॥ २६ ॥
बोलेरिपुहनसुनहुभामिनी, नाहक दोषन दोजे ।
जोकरतूति बनो नहि हमते, सो हम सो भरी लीजै ॥ २७ ॥
बिन जानेकरतूतिसबनको, तुम्हरे घर भो व्याहु ।
सोउपछितावनराखहुप्यारी, अब करि लेहु समाहु ॥ २८ ॥
जाके हित तुम रोस बढ़ावहु, सो मति करहू उपाई ।
वैसे न सेवा में तुमरे हम, हाजिर चारिउ भाई ॥ २९ ॥
सुनि बानि रिपुदवनलालको, बोली कोउ सुकुमारी ।
कहां पाई येती चतुराई, कहिये लाल बिचारी ॥ ३० ॥
कीकहुंमिलीनारिगुणआगरी, की गणिकन संग कीने ।
तीनो भाइन ते तुम्हरे मईं, लखियतु चिन्ह नवीने ॥ ३१ ॥
रिपुहन कह भलकह्यो भामिनी, मैं या भेदहि जाने ।

गणिका नारिन हूं ते सो गुन, तुम्हैं अधिक हम मानै ॥ ३२ ॥
हमरी तुम्रो चिन्ह लाडिली, एकै भांति लखाई ।
ताते सखी हमार तुम्हारो, चाहिये अवसि सगाई । ३३ ।
सुनि नव उक्ति युक्ति की बातें, बोली सिद्धि सुकुमारी ।
सुनिये रसिक राय रघुनंदन, आनंद कन्द बिहारी ॥ ३४ ॥
अति अभिराम काम हूं मोहत, मूरति देखि तुम्हारी ।
कैसे बची होयगी तुमते, अवध पुरी की नारी । ३५ ॥
या कहि रहि लुभाय सुंदरी, सिद्धि कुंवरी सुख औना ।
ताके हाथ पकरि रघुनंदन, बोले अति मृदु बैना ॥ ३६ ॥
दो० जस मरजादा जगत की, बांधि दियो करतार ।
राजा रंक जती सती, करत सोई व्यौहार ॥ २ ॥

चौपाया छन्द ।

अनुचितउचितविचारि लोगसब, तहं तस राखत भाऊ ।
तुम तो अपनी अस जनती हो, सबही केर सुभाऊ ॥ १ ॥
यह सुनि भरतलखन रिपु सूदन, हंसे सकल दै तारी ।
सिद्धि आदि सब राज कुमारी, तेउ अति भई सुखारी ॥ २ ॥
यहि विधि हंसि सहाय रघुबरसे, दे देवाय मृदुगारी ।
नाना भांति मनोरथ मन की, लागी करन सुखारी ॥ ३ ॥

"होलीकाविनोददीपिका" श्रीमज्जनकिशोर शरणकृत से ।

सवैया ।

चन्द्रकला कहि स्याम सुजान सजो नव अंग विभूषन ती के ।
बेसरि बेसरि को बर बिंद अमंदिर चोसर बेनिजू नीके ॥
कानें बिभूषन सुन्दर साजिहमेल गले पहिरांउ गुनीके । कंचुकि
चित्र बिचित्र सजो पिय परन होइ मनोरथ ही के ॥ १ ॥

सारि सुरंग किनारि ललाम लगो जरतारिन गोटन मोती। घेर घनेर घुमार कटितट मास पटा पटि को पटुनोती ॥ चूरी चमाचमकी अंगुरी मनि की मुन्दरी बनि आरसि जोती। नेवर औ बिछिया रसना युत राघवजू रचिये रस गोती ॥ २ ॥
लाल कही सुनु सोमकला, करिये अपनो मन भावत सोई। पै असमंजस एक बड़ो कहि जातन लाजनि जीभ लकोई। भूषन अंसुक और सबै फबि हैं अंग जो रंगसाज सजोई। कंचुकि तो तबहीं सजि हैं कुच आपनि यो रस रंग रिझोई ॥३॥
सांचि कही नृपनाथ कुमार परन्तु न अंग विधि विधि जानी ॥ होय सभी जेहि तामु सुअङ्ग तबै मिलि रंग रचै सुख दानी। सो जिन सोच करो अबहीं ननदी अपनो करि आदर आनी। लेब रिझाय घड़ी छिन मांगि थराथि बड़ो करकै मनमानो ॥ ४ ॥
लाल हंसे सुख दै पटुका झटका कर चंदकला हंसि दीनौं। नारि सबै हंसि तारि दई रस हांसि छके अनुराग नवीनौं। रूपलता मुख चूमभगी एक काजर बिंदु कपोलन दीनौं ॥ राघवजू तिहि दौरी गही कर मार भगो मुख चुंबन लीनौं ॥५॥

"उदवन्तप्रकाश" श्री मौली कविकृत से ॥

कवित्त।

को हो तुम द्वारे मैं पुकारी अन्धिआरे आनि को तो चक्रवारे कहां कहत कुलाल हो। नाजु धरनीधर हां जु पहिचानो मैं सेष हो बिशेष ते धरत फनी लाल हो ॥ मौलि अहि गंजन कहत खग पति होतो हरि होते भले कोऊ बान्दर बिसालहो। हंसी कहि कान्ह वृषभानजु को मेहमान हंसी कही राधे जानो आधे नंद लालहो ॥ १ ॥

आत उस सिपाहीको भी उसी तरफसे जाना था सो वह भी घूमा तब तो बङ्गाली बाबू अपनी जीने की आशा छोड़ धीरे २ चलने लगे। कुछ दूर साथ चलने पर बङ्गाली की पेठ में बिल्ली लड़ती थी कि सिपाही ने पूछा बाबू तुम कहां जाओगे खैर किसी तरह जीभ ऐंठ दांत दबा गोलमाल की बोली से बाबू ने जबाव दिया दम भर ठहर कर बङ्गाली ने पूछा कि "बाबू आपनार नाम ठो क्या है" सिपाही ने कहा "हाथी सिंह" बस अब बङ्गाली बाबू की घबराहट का ठिकाना नहीं इन ने समझा कि जङ्गलों में हाथी और सिंह मिला करते हैं सो यही है। इसने अभी हमें नहीं चीन्हा है आदमी समझेगा तो एक दम खा जायगा। इतने ही में तो सिपाही ने भी पूछा कि "बाबू तुम्हारा नाम क्या है" धूर्त्त बाबू ने सोचा कि मैंने सच्चा नाम बतलाया नहीं कि इसने खाया नहीं इस लिये इस के नाम से बढ़ चढ़ के बतलाना चाहिये। कहने लगा कि "हमारा नाम पूछता ? हमारा ? हमारा नाम सौबाघ, सै सिंह, पंचाश भालू, एक डाला बिच्छू घड़ा भर के बर्रै और एक बकस सांप" सुन के वह सिपाही भी मनही मन हंसने लगा।

२—उल्लू बसन्त—किसी नगरमें एक पुरुष रहता था उसकी समझ सबसे निराली ही रहती थी, उस बिचारे को उल्लू समझ लोग उस से रात दिन ठट्ठा ही किया करते थे यदि कोई उससे कह-ता कि देख देख कौआ तेरा कान ले गया तो वह बिचारा घबराकर उस कौवेकी ओरदौड़ता भी यह न सोचताकि पहले

अपने कान तो टटोलूं! किसी समय उसे थाली ढूंढ़नी होती तो भी लोटा, लुटिया, गगरी, डबिया तक में हाथ डाल डाल के खोज डालता यदि कोई उससे कहता कि आज तेरी आंख फूट गई है तो बिचारा घबराया हुआ जब तक दर्पण में अपनी आंखें न देखले तबतक चैन नहीं पाता था। उस उल्लू बसन्त को यह समझ न थी कि मेरी आंखही फूट गई होती तो मैं देख कैसे सक्ता घर में एक उसकी विधवा मा थी, दूसरी उसकी बहू थी और तीसरा वह आप था पर अपने उल्लूपने से सबको कष्टही देता रहता था।

एक दिन वह बाहर गया था तो किसी लड़के ने उस से विचित्र ठट्ठा किया वह यह कि उसे देखते आंख में आंसू भर के कहने लगा कि हाय हाय बड़ा अनर्थ हुआ ईश्वर करै ऐसा दुःख बैरी को भी न हो जैसा तुम्हारे घर पड़ा है" उल्लू घबराकर बोला "ऐं ऐं क्या क्या!—हमारे घर—हमारे घर" है उसने कहा "हां तुम्हे नहीं" मालूम!" उल्लू "नहीं तो तब वह चमक के बोला कि "अरेरेरे—तुमारी स्त्री न आज विधवा हो गई" यह सुनते ही तो उल्लू बसन्त का आधा सांस नीचे और आधा ऊपर रह गया। ठट्ठा करने वाले की आंख की चितौनी पा और भी कितने ही रस्ते चलते उस उल्लू के चारों ओर खड़े हो गये और कहने लगे कि 'हायहाय कैसा अनर्थ हुआ! अभी उस बिचारी की के बरस की अवस्था अभी उसने क्या क्या सुख भोगा! हा! उसके भाग में यही था। यह सुन वह और घबराया औ झट छाती पीटता आंसुओं में लद फद होता घर की ओर भागा। दूरही से उसको

मा नें उस के रोने का कोलाहल सुना। इतने में तो वह भाग्गी पहुंचा और चोकड़ी में गिर पड़। और छाती पीट के लगा रोने उस की मा कितनी ही समझा हारी पर यहां कौन सुनता है।

जब बड़ी देर हो चुकी तब उस को मा धीरज धराकर पूछने लगी कि 'रे कह तो सही क्या हुआ! क्यों रोता है, वह बोला कि तुझे अभी तक नहीं" मालूम है सुनेंगी तो तू भी पुक्का फाड़ के रोवैगी, वह कुछ घबरा कर बोली 'भला कह तो सही।'

उल्लू बोला' कहूं क्या मेरी बहू विधवा हो गई' औ साथ ही फिर रोने लगा। उसकी मा समझ गई कि किसी ने ठट्ठा किया है। कुछ मुसकिरा कर बोली कि अरे मूर्ख तुम्हें इतनी समझ नहीं भला तैं तो जीता हो है बहू कैसे विधवा होजायगी?" उल्लू भी लाल लाल आंखें कर के बोला यह आई है मुझे समझाने—बतला तो—मैंतो जीता ही हूं तू कैसे विधवा भई? जैसे तू भई तैसे यह भी हो गई?॥ यह सुन बिचारी बुढ़िया मा लजाकर औ उसकी मूर्खतापर हंस चुप रह गई॥ उल्लू बसन्त जो फिर चिचिया चिचिया कर रोने लगी।

३—एक मनुष्य की दुःखभावा पत्नी अत्यन्त ज्वरक्रान्त हुई और नैराश्यकी अवस्था में अपने पति से कहने लगी "मियां! मैं मर जाऊंगी तो तुम कैसे जीयोगे?" इस मनुष्य ने उत्तर दिया "बीबी मुझे तो इस बातकी फिक्र लग रही है कि यदि तुम बच जाओगी तो मैं कैसे जोऊंगा॥"

४—एक बेर एक छोटे से लड़के की यथार्थ उत्तर देने के लोग बड़ी प्रशंसा कर रहे थे, एक महाशय जो वहां उपस्थित थे,

बोल उठे कि जो लोग लड़कपन में तीव्र होते हैं बड़े होने पर अहमक और निर्बुद्धि हो जाते हैं और इसके प्रतिकूल जो लड़कपन में निर्बुद्धि और अहमक होते हैं बड़े होकर तीव्र हो जाते हैं। लड़के ने उत्तर दिया निःसन्देह महाशय! आप लड़कपन में अत्यन्त तीव्र रहे होंगे।।"

५—कोई आदमी इस बात का अहङ्कार हांक रहा था कि मै कभी सत्य नहीं बोला हूं, दूसरे मनुष्य ने उत्तर दिया "तो इस समय तुम पहली वार सत्य बोला ॥

६—एक वकील महाशय संध्या को कचहरी से लौट कर घर आते थे, संयोग से उनका कलम बस्ते में से गिर पड़ा। एक मनुष्य जो मार्ग में चला जाता था उसने इस लेखनी को उठाकर शब्द किया मियां जी! मियांजी! यह लो तुम्हारी छुरी गिर गयी है, वकील साहिब चकित होकर कहने लगे कि अबे पागल हुआ है? कलम को छुरी बतलाता है? उसने उत्तर दिया अजी मियां! बातें न बनाओ इसी से आपने हजारों से मुकद्दमे वालों के गले काटे होंगे।

७—एक मंगते ने किसी मनुष्य से कुछ मांगा, कि मुझे दे इस पर उस ने बहुत सी गालियां दीं, तब मंगते ने बोला कि अच्छा बाबा जैसा देओगे वैसा पाओगे ॥

८—एक बड़े मनुष्यने अपने किसी मित्र से कहा, जितने नामों मे वान् शब्द आता है, जैसा हाथीवान्, सार्वान्, गाड़ीवान्, इत्यादि सो सब कुजाति है। उसने कहा हे दयावान् आप सत्य कहते हैं।

९—इब्राहीम आदमने स्वपने में देखा कि एक मनुष्य

कोठे पर कुछ खोजता है. पूछा कि हे प्रिये तुम क्या खोजते हो? कहा मेरा ऊंट खो गया है। उसी को खोजता हूं। इब्राहीम ने कहा, तू क्या उल्लू है, जो कोठे पर ऊंट खोजता है? उसने कहा तू उल्लू है जो राज में ईश्वर को खोजता है।

१०—किसी ने कुबड़े से पूछा कहो जी क्या चाहते हो? तुम्हारी पीठ सब लोगों कीसी हो जावे? अथवा सब लोगों की तुम्हारी सी, कहा, हां, मैं भी यही चाहता हूं, क्योंकि जिन आंखों से वे मुझे देखते हैं, उन से मैं भी उन्हें देखूं।

११—एक कंगाल एक दिन अपने मित्रों से कहने लगा मैं जो राजा होऊं तो तुम सब मित्रों को बड़ा मनुष्य करूं। उन्ह में से एक बोल उठा, न नव मन तेल होगा न राधा नाचेगी।

१२—एक लड़की कहीं अपने दो भाइयों के साथ खेल रही थी, लड़की सब से छोटी थी औ वे दोनों भाई इस से बड़े थे। उन दोनों में भी बड़का अपने को बहुत कुछ लगाता था। खेल हो खेल में छोटकेनें किसी बात पर बहन से कहा कि "के बेर कहा साली तैं सुनती नहीं?" यह गाली सुनते ही जब तक वह छोकरी बड़े भाई से कुछ कहना चाहे तब तक बड़ा भाई छोटके को झिड़कार के बोला कि "क्यों बे साले! बहन का कोई साली कहता है!"

१३—एक बाबू साहब ने नौकर रक्खा सो इन के भाग्य से वज्र बधिर मिला. किसी दिन दैव योग से बाबू साहब के यहां कोई पूजा थी सो ठाकुर जी को झगड़

चढ़ाना आवश्यक था। बाबूनें उस नौकरको बुला के कहा कि "देखो ठाकुर जी की पूजा है सो पताका चाहिये उस ने कान सामने कर भौंह सिकोड़ आंखें मिचमिचा कर कहा "एं? क्या चहिये" बाबू नें कहा 'पताका पताका' वह बोला क्या पटाका'? इस ने हाथ ऊंचा कर बतलाया 'फरहरा फरहरा' वह फिर आधी मुंह फाड़ के बोला 'क्या घरहरा? तब बाबू तमक कर गंवहियां झोंक में चिचिया कर बोले 'धाजा धाजा' वह सिर हिलाकर बोला "हां हां समझ गये खाजा" तब बाबू सिर से पैर तक झझका ही कर बोले अबे पाजी "झगडा झगडा" वह बोला "हां हगड़ा? अच्छा लाताहूं बिचारे बाबू सिर ठोक के रह गये पर न समझा सके।

१४—चार जने बनारस से बिन्ध्यवासनी चले, एक ने कहा कि 'भाई यहां से सोलह कोस चलना है भारी सफ़र है थक जांयगें' दूसरा अपने को कुछ गणित में लगाता था वह झट पट बोल उठा कि 'ओ: चिन्ता मत कीजिये: सोलह कोस है तो चलने वाले भी तो चार जने हैं बस आद-मी पीछे चार चार कोस पड़ा कौन बहुत दूर है?

√१५—जो पथिक डाक गाड़ी से कहीं जाने के लिये किसी स्टेशन् पर जा पहुंचे उन में एक जना, अपने को सबों का चौधरी समझता था, वह टिकट लेने गया उसने केवल साढ़े तीन टिकट ले जो टिकेट मास्टर जल्दी में थे उन्होंने न पूछा कि आधी टिकेट किसकी है और वह लड़का कहां है। बस डाक गाड़ी को खुलतेही क्या देर लगती है ॥ ये सब एक कमरे में चढ़ बैठे और घर्र घर घरररररर गाड़ी

खुल गई । दैवात् झट उस स्टेशन पर पहुंचे जहां टिकट देखी जाती थी । तबतक इस चलाक चौधरीने अपने साथियों में से ७ जनों को ऊपर मचान पर बैठा दिया था और एक साथी के साथ आप नीचे बैठा था । इतने में टिकट कलेक्टर ने आकर ताली खटखटाई औ कहा 'टिकेट टिकेट' तब तक झट उसने साढ़े तीन टिकट उसके हाथ थमादी, उसने कहा 'वेलट्स कै मुसाफिर ? चालाक बाबू को कुछ अंगरेज़ी में भी अभ्यास था । उसने कहा 'साहब काउण्ट कर लीजिये सब ठीक है' साहब बहादुर ने आंख उठाकर देखा कि ऊपर भी लोग कसामस भरे हैं । उसने कहा 'वेल कैटना आदमी भरा है सबका टिकेट डो' । चालाक पथिक बोला 'वाह साहब देखिये ऊपर सात नीचे दो बस साढ़े तीन तो हुए । सेवन् अपान्ट देखिये ईक्वल् टू थ्री ऐण्ड हाफ् ($\frac{७}{२}$ = ३ + $\frac{१}{२}$)

१६—एक रोज़ किसी लड़के ने शाहजहां बादशाह के पास नालिश की कि मेरी मा के पास तीन लाख रुपया है और मुझ को कुछ नहीं देती बादशाह ने उस की बुढ़िया मा को बुला कर हाल दर्याफ्त किया, उस ने साफ़ कह दिया कि तीन लाख रुपया बेशक है, पर जब लड़का होशयार होगा दूंगी, अभी खराब करेगा, बादशाह ने हुक्म दिया कि लाख रुपया लड़के को दे और लाख रुपया अपने खाने को रख, इस क़दर तुम दोनों के लिये काफ़ी है, और बाक़ी लाख रुपया बादशाही खजाने में दाखिल कर दे । जब मुक़द्दमा फ़ैसल हो चुका और हुक्म काग़ज़ पर चढ़ गया बुढ़िया बहुत घबराई और चालाकी करके बादशाहसे अर्ज़ की कि करामा-

त लड़के को लाख रुपया वाजिबी दिलवाया मेरा पति उस का बाप था, पर आपका मेरा पति कौन होता था, जो बरा-बर का तरका लेते हैं इतनी बात मिहर्बानी करके बतला दीजिये कि जिस्मे आगो का इस रिस्तदारी को खबर रहे। बा-दशाह अपने मन में लज्जित हुआ और हंस के उसका रुपया उलटा दिलवा दिया॥

१७—एक दिन एक राजा अपनी अटारी पर बैठा था। अकस्मात् किसी मनुष्य को अपनी भीत के नीचे खड़ा देखा कि एक पक्षीको हाथ में लेकर देखाता है। राजाने उसे बुलाकर पूछा कि तू यह पक्षी मुझे क्यों देखाता है? उसने निवेदन किया कि हे महाराज मैं ने आप के ओर से एक मनुष्य से होड़ अर्थात् शर्त करके इस पक्षी को जीतकर आप केलिये लाया हूं राजा यह वचन सुन कर अत्यन्त हर्षित हुआ और पक्षी को लेकर पाकशाला में भेज दिया। उसने फिर थोड़े दिनके पीछे राजाके निकट आकर एक भेड़ी राजाके सन्मुख खड़ी करके निवेदन किया कि इस को भी आप की नाम की बढ़न्ती मे मैंने होड़ में जीता है राजाने उसे भी लेलिया। फिर ३री बेर किसी २ रे मनुष्य को अपने संग लेकर राजाके समीप आया। राजाने उसे सुने हाथ देखा तब पूछा आज तू मेरे लिये कुछ न लाया तब उस मनुष्यने निवेदन किया कि हे कृपानिधान मैंने आपके ओर से इसके साथ दो सहस्र रुपये की होड़ अर्थात् शर्त लगाई थी। परन्तु हार दी, इसलिये यह मनुष्य अब रुपये के लिये यहां आया है। राजा यह वचन सुनकर मुसकुराया और रुपये उसे देकर कहा कि अब मेरे

औरसे कभी किसी के संग जूआ मत खेल, क्योंकि मैं कभी तुझ से न लूंगा न दूंगा ॥

१८—एक व्यभिचारणी स्त्री अपने पति को तिलाञ्जलि देकर एक रसिक पुरुष के साथ उड़ गई । पति ने स्त्री के बहका ले जाने का रसिक राज पर अदालत में चार्ज किया, तो सबूत न होने से मुक़द्दमा डिसमिस । पर जब मुद्दई, मुद्दाअलह कचहरी से जाने लगे तो हंसोड़ मैजिष्ट्रेट ने दोनों पुरुषों को अपने पास खड़ा कर स्त्री से पूछा "वल् औरट ! अब टुम इन डोनों में से किस के साथ जायगा ?" हाज़िर जवाब औरत क्या कहती है "हुज़ूर मा बाप हैं जिस के साथ करदें, उसी के साथ चली जाऊं ।"

१९—नक़ल है कि एक साहब बहादुर ने किसी ग़रीब हिन्दुस्तानी का मुक़द्दमा इस बुनियाद पर ख़ारिज कर दिया कि "औरत को अख़्त्यार है चाहें जिस के साथ रहे" हिन्दुस्तानी लाचार मेम साहब के पांव पड़ा, मेम साहब ने कहा, "कल आना" जब साहब दूसरे दिन कचहरी से लौट कर मेम साहब के कमरे में जाने लगे, तो आया ने कहा "अन्दर जाने का हुक्म नहीं" साहब । क्यों ?

आया । मेम साहब कहती हैं कि हम आप की बीबी नहीं हमने दूसरी शादी करली !

साहब—क़ुसूर ?

आया—कुछ नहीं (इतने में ही मेम साहब निकल पड़ीं)

मेम । हमारी खुशी, आज ही आप एक ऐसा मुक़द्दमा फैसल कर चुके हैं कि जिस्के साथ खुशी हो, उसी के साथ औरत रह सक्ती है !

साहब—समझ गये, झट निगरानी करा कर जिस की औरत थी, उस के हवाले की !

२०—एक चौबे जी किसी यजमान के यहां लड्डू खाते खाते अकड़ गये और हुई तयारी पेट फूल कर राम राम सत्त की। यजमान ने कहा "चौबे जी को चूरन दो" चौबे जी मरते मरते क्या बोले "अरे भैया पेटमें चूरन कूं जगे कहां ? जो चूरन कू ही जगे होती तो एक लड्डू ही और न खाय लेते ?"

२१—प्रश्न । कहिये घड़ी स्थावर पदार्थ है कि जङ्गम । उ० । चले तब जङ्गम और बन्द रहे तब स्थावर ।

२२—एक मुखतार साहब कचहरी जाने के समय झट पट कपड़े पहिन कर अपने नौकर से बोले कि दौड़ के देख तो आ रे घड़ी में क्या बजा है ? नौकर बोला कि हुजूर छ, मुखतार ने कहा अबे जाके देखेगा भी कि यहीं से कहता है छ, नौकर बोला कि हजूर में सबेरे ही जाकर देख आया हूं ठीक छ, बजा है ॥

२३—(एक लाला जी और उनके पुरोहित की बात चीत)

लाला जी—कहिये पुरोहित जी आपने तो ठीक सात बजे बरात निकालने का लगन दिया था पर अभी हमारी बरात को सजते २ लग ढग दो घंटे लगेंगे तब कहिये लगन कैसे बनेगा ?

पुरोहित—कुछ चिन्ता नहीं आपकी घड़ी में जब सात बजने को पांच मिनट बाकी रहे तब आप उसे बन्द कर दीजियेगा और जब आप की बरात की सजावट हो जाय और आप लोग भी चलने को बिलकुल तैयार हो

जायें तब घड़ी को फिर चला दीजियेगा। बस पांच मिनट बाद जब ठीक सात बजे तक बरात निकालियेगा। कीजिये लगन भी बना और बरात भी सजी॥

२४—एक गंवार कभी रेल पर सवार न हुआ था एक दिन उसे किसी मुक़दमे में इलाहाबाद जाना पड़ा, तो वह रेलवे ष्टेशन पर गया, दैवात्, घण्टा बज चुका था, और रेल। चल निकली थी, सीटी बजती जाती थी, यह देख कर गंवार दौड़ा और चाहा था कि उछल कर गाड़ी पर चढ़ जायं, गार्ड ने मना किया तो वह कहता क्या है, वाह वाह, लो साहिब रेल तो मुझे सीटी दे दे कर इसारे से बुलाती है और तुम मनअं करते हो यह क्या बात है॥

२५—एक दिन विद्वानों की सभा में यह प्रकरण आ पड़ा कि चुम्बक पत्थर से अधिक आकर्षण शक्ति किसी पदार्थ में नहीं है, एक मनुष्य बोला कि मेरी प्यारी बल्लभा के चुम्बक में अधिकतर आकर्षण शक्ति है जो मुझे ७ सात कोश में प्रति दिन खींच लाती है॥

२६—एक मनुष्य ने एक से पूछा कि अपने अपने बेटे को मुख़तारी का काम क्यों सिखाया? उसने जवाब दिया कि उस को बचपन से झूठ बोल ने की लत थी॥

२७—जब नव्वाब सिराजुद्दौला पलासी की लड़ाई से भाग आये तो दर्बार में भाड़ों ने मुबारकबाद गाया "नव्वाब आये हमारे भाग आये।"

२८—नादिरशाह हिन्दुस्तान से रूपबाई और पचलोना-भांड़ को साथले गये थे। एक दिन बाईको गाने पर खुश हो कर हिन्दुस्तान जाने का हुकम दिया, तो भांड़ भी साथ ही डेरा डंडा उठाकर चले। बादशाह ने पूछा, "भड़ुओ। तुम को किस ने हुक्म दिया?" वह बोले "जहांपनाह जहां बाई नहीं वहां पचलोना का क्या काम है?"

२९—मुहम्मदशाह के दर्बार में भाड़ोंने क्या नकल किया, कि एक तो बादशाह बना और दूसरे वज़ीर और मुशाहिब-बने। एकने आकर खबर दी, "हुजूर दुस्मन की फौज़ आ प-हुंची।" बादशाह बोले "आने दो, कुछ पर्वाह नहीं, वल्लाह दमभर में हटा दूंगा, दूसरेने खबर दी "जहां पनाह जमना पार आगई।" बादशाह बोले "अच्छा इसपार क़नातें खरी कर दो" वज़ीर ने पूछा "मोर्चे के वक्त क़नात क्या होगी?" बादशाह बोला "अजी कनात के भीतर से हाथ चमका कर सिर्फ़ इतना कह देने से फौज हट जायगी कि "मुए। इधर न आना इधर जनाने हैं।"

√३०—राय गिरीधर लाल से एक मुसल्मान ने कहा कि "खाने वा पूजा के समय हिन्दू लोग तो पैर धोते हैं, पर हम लोग तो सिरधोते हैं।" राय साहिब ने जबाब दिया कि "हिन्दू बनाये गये थे, तब असमान से सिधे फेंके गये थे, और आप लोग सिर के बल से फेंके गये थे इस से जिस को जहां कीचड़ लगाथा, अब वह जाति वही अंगधोती है।"

३१—हरिश्चन्द्र को लाहोर में एक मस्त मिला। उन्हों ने पूछा कि "आप का मज़हब क्या है?" मस्त बोला मेरा तो

कोई मज़हब नहीं, पर मै चार मज़हब बिगाड़ चुका। जब हिन्दू थे मुसलमानिन से व्याह किया, तब हिन्दुओं का मज़हब बिगड़ा। उसके मरने के पीछे सूअर खालिया तब मुसलमानी सत्यानाश हुई। फिर सिक्ख हुआ, और हुक्का पिया तब सिखपना मिटा, और क्रिस्तानी मत लिया। अब थोड़े दिन से उसको भी अविश्वास से खराब करके चैन करता हूं। मज़हब चार बिगाड़े पर मैं ज्यों का त्यों हूं।"

३२—कौलिश्वराण से किसी राजा ने कहा "कवि जी दूज के चन्द्रमा को प्रणाम कीजिये ?" पण्डित जी बोले, "महाराज। यह चन्द्रमा नहीं हैं सूर्य्य जी के घोड़े की नाल टूट कर छूट गई है।"

✓ ३३—एक उस्ताद ने अपने शागिर्दों को समझाया कि दो निषेध मिलकर एक स्वीकार का हुक्म रखते हैं। एक दिन लड़कों ने उस्ताद से पूछा कि "जनाब कल तातील है ?" उस्ताद ने जबाब दिया "नहीं नहीं।" लड़कों को उस्ताद की सिखलाई हुई बात याद थी इसलिये वह २रे रोज़ बिलकुल मदरसे में न आये। ३ रे दिन उस्ताद ने पूछा कि "कल तुम लोग क्यों नहीं आये ?" लड़कों ने जबाब दिया कि "कल तातील थी।" उस्ताद ने पूछा "किस ने दी थी ?" लड़के बोले "जनाब जब हम लोगों ने पूछा था आपने" "नहीं नहीं" यानी दो निषेध वाचक शब्द कहे थे जो बमूजिब आपही के फ़र्माने के स्वीकार का हुक्म रखते हैं। उस्ताद मुस्करा कर चुप हो गया॥

✓ ३४—एक वकील ने किसी गवाह से चिढ़कर कहा

"तुम्हारे चिहरे से साफ़ बदमाश की सूरत झलकती है।" गवाह ने जवाब दिया "मुझे आज तक खबर न थी कि मेरा चिहरा आईना है"

३५—एक जज किसी गवाह का इज़हार ले रहे थे। गवाह शरारत से अक्सर हिकलाता था। जजने खफ़ा होकर कहा "मैं समझता हूं कि तुम बड़े पाजी हो।" गवाहने जवाब दिया "इतना पाजी हर्गिज़ नहीं हूं। जितना कि हज़ूर—मु मु मुझे खयाल करते हैं॥"

३६—चार आदमियों ने शराकत में कुछ गट्ठे रूई के खरीदे और चूहों से उसकी हिफ़ाज़त के लिये एक बिल्ली पाली और आपस में यह शर्त की कि हर एक साझी उसकी एक २ टांग अपने ज़िम्मे करके कोई चीज़ घुंघरू या पैंजनी वग़ैरह के किस्म से पहचान के लिये उस में डाल दे। कुछ रोज़ पीछे इत्तिफ़ाक से बिल्ली को एक टांग में चोट लग गई और उस टांग के मालिकने इलाज के वास्ते उस में कपड़ा तेल से तरकर के बान्ध दिया। एक दिन बिल्ली कहीं चिराग़ के पास गई तो यकायक इस कपड़े में आग लग गई। बिल्ली घबरा कर रूई के गट्ठों की तरफ़ जहां उसे चूहों के शिकार करने की आदत थी भागी। रूई में आग लग उठी और बिल्कुल जल कर राख हो गई। इस बुनियाद पर बाक़ी तीन शरीकों ने इस चोटीली टांग के मालिक अपनी चौथे शरीक पर अदालत में नुक्सानी का दावा किया। हाकिम ने मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात कर के यह फ़ैसला किया कि चूंकि जिस टांग पर तेल का कपड़ा लपटा हुआ था उससे ज़ख्म के सबब बिल्ली चल नहीं सकती थी और आमद-

रफ़्त में वह टांग उठी रहती थी. पस बाक़ी तीन टांगों को वजह से रूई में आग लगी और उन्हीं टांगोंका कुसूर है । इस लिये मुद्दाअलेह की डिगरी दो जाती है कि तीनों मुद्दइयों से जिन के हिस्से की टांगों के सबब से बिल्ली दौड़ कर रूई के गट्ठों की तरफ़ गई बिल्कुल क़ीमत अपनी रूई की वसूल करले॥

३७—एक काहिल आदमी अपने खानदान के पुराने होने पर बड़ी डींग मार रहा था । एक किसान जो पास बैठा था । बोल उठा "ठीक है जितना पुराना बीज उतनो ख़राब पैदा वार ॥"

३८—एक ठठोल अपने किसी मित्र से मिलने को गया उस के घर पहुंच बाहर से उसे पुकारा तब वह गोद में अपने लड़के के लिये निकल आया ! ठठोलने हंसकर कहा इस लड़के में मेरे से चिन्ह पाए जाते हैं यह सुनकर उस के मित्रने उत्तर दिया हां ठीक है "नराणां मातुलक्रमः"

३९—किसी ठाकुर द्वारे में बहुत से लोग गाते बजाते थे । एक योगी खंजरी लिए अचानक आनिकला और उन सभों का गाना बन्द कर आप अपनी बेसुरी तान चलापने लगा उसके गा चुकने पर लोगोंने कहा बाबाजी तुम्हारे गाने से कोई न रीझा योगी ने कहा रीझो या न रीझो मुझे तो ठाकुर को रीझावनो है वहां ही एक चौबे बैठे थे बोल उठे "सारे मोकूं तो रीझाय हो नांय सक्यो ठाकुर क्या मोंहूं तें कूर है ॥"

४०—एक चौबे बैल की गाड़ी पर चढ़े पूड़ियां खाते चले जाते थे एक दूसरा ब्राह्मण चौबे को देख बोला चौबे जी आप बिना चौका दिए गाड़ी ही पर बैठे खाते हो चौबे बोला"

मारि तू येह नांव मानि है कि चौका तो वाही के गोबर की दियो जात है जो ये सगड़ में जुतो है।"

४१—एक ने एक से पूछा जहान में सब से बड़ी क्या? उसने जवाब दिया "अकिल" फिर उसने पूछा रहती कहां है? जवाब दिया " रोटी में जब पेट भरा होता है" खाती क्या है? जवाब। गम, करती क्या है? जवाब। "काजी को पाजी और पाजी को काजी।"

४२—एक पण्डित जी वर्ण विवेक पर कुछ वक्तृता कर रहे थे एतने में एक मसखरा बोल उठा पण्डित जी कुत्ते की क्या जाति है हिन्दू या मुसलमान पण्डित जी ने जवाब दिया कुत्ता तो हिन्दू मालूम होता है क्योंकि जो मुसलमान होता तो दूसरे कुत्ते को अपने साथ खिलाने में न भूंकता।

४३—एक पादरी साहब बहुत से आदमियों कि भीड़ एकट्ठा किए बड़ा गुल शोर मचाए हुए थे कि एक हिन्दू महाशय बोल उठे आप के खोदा को उलट दो तो कुत्ता हो जाते हैं पादरी साहब ने कहा हां ठोक है। मगर आप अपने भगवा-न को तो देखिए पहिला अच्छर इसका कैसा खराब और मैला है। हिन्दू साहबने जवाब दिया हां पर बिलायत कि जो बड़ी प्रतिष्टित सभा प्रिवी कौंसिल है उसके मुकाबिले में तब भी अच्छा है॥

४४—एक किसी जज साहब के इजलास में गौकी चोरी का कोई मुकद्दमा पेश था साहब बहादुर बड़े, अचरज से पूछने लगे गौ क्या चीज़ है अमलोंने बहुत कुछ सिर मगजन किया पर जजसाहब नहीं मानते थे और बार बार यही कहते

थी कि उसे यहां इजलास पर हाज़िर करो अमलों ने कहा हुजूर वह यहां नहीं आसकती बाहर है आप चलकर देख लीजिए साहब बाहर निकल आए गौ को देख कर बोले तुम सब काला आदमी हमें क्यों इतना तंग किए था यह क्यों नहीं कहता कि यह बैल का मेम है।

४५—एक भिखारिन अन्धी बुढ़िया बोझा सिर पर लादे जा रही थी किसी ने पूछा बुढ़िया तुम्हारा नाम क्या है उस ने जवाब दिया दौलत, आदमीने कहा क्या दौलत भी अंधी होती है बुढ़िया बोली अन्धी नहीं है तो क्यों मेरे घर न आई॥

४६—एक अमीर कोठे पर बैठा लड़के को खिला रहा था कि एक आज़ाद फकीर ने आकर सवाल किया बाबा कुछ दिलवा अमीर ने चट एक रुपया फेंका फकीर रुपया उठा बोला है तो रंग का काला पर पेट सुफेद करता है।

४७—एक धनवान हबशी हाथी पर चढ़ा चला जाता था कि एक आज़ाद फकीर आकर मांगने लगा अरे काले कोयले अल्लाह के नाम पर कुछ फकीरों को दे भी इस पर वह हबशी कुछ चिड़ चिड़ाया आज़ाद बोला न दे चढ़ता क्यों है तब उसने एक पैसा फेंका आज़ाद ने कहा लाल रहेगा।

४८—एक किसी राजा के राज में ४ चोर सेंध देते पकड़े गए राजा ने उन्हें सूली देने की सज़ा तजवीज़ कर जल्लादों को सौंप दिया जल्लादों ने राजा की आज्ञानुसार ३ को शूली पर चढ़ा दिया जब चौथे की बारी आई तो उसने विचारा कि सूली से बचने की कोई उपाय करना चाहिए यह सोच बोला भाई तुमने इन मेंसे ३ को तो मारही डाला एक में बचादूं और

मुझे एक बहुत उत्तम विद्या मालूम है जो केवल राजाओं ही के योग्य है सो एक बार राजा की भेट हमारी कराय तब मुझे सूली पर चढ़ाओ जिस में वह विद्या मैं राजाको बताटूं नहीं तो विद्या मेरे साथही लुप्त हो जायगी, जल्लादों ने चोर की यह बात सुन राजा से जाकर खबरकी राजाने उस चोर को बुलाय पूछा तो चोर हाथ जोड़ बोला पृथ्वी नाथ मैं सोने की खेती की विद्या जानता हूं एक सरसों बराबर सोने की बिया बो दीजिए एक महीने में बड़ा भारी पेड़ हो आवेगा जिस में तोल में टके भर सोने के फूल फूलेंगे महाराज अधिक क्या कहें आप हमारे कहे के अनुसार करियेगा तो इसके सच झूठका हाल आप को खुलेगा, राजा बड़े अचरज में भर बोला चोर क्या यह सच है? चोरने फिर जबाब दिया महाराज आप भगवान के रूप हो ऊपर ईश्वर नीचे आप सो आप से झूठ बोल मैं कहां बच कर जाऊंगा, अजमा कर देख लीजिए एक महीने के उपरांत यह हमारी बात जो झूठ ठहरे तो हमें प्रान दण्ड हो नहीं तो हमारा छुटकारा किया जाय, राजाने आज्ञा दिया अच्छा ऐसा हो कर चोर तब सरसों बराबर एक सोने का बीज सुनार से बनवाय राजाके अन्तःपुर में क्रीड़ा सरोवर के समीप भूमि का शोधन कर जिस समय राजा मन्त्री प्रधान सब एकट्ठे थे चोर राजा के आगे आय हाथ जोड़ बोला महाराज बिया तैयार है अब इस के बोने के लिए किसी को आज्ञा दीजिए राजा कहा तू ही इसे बो चोर बोला महाराज हमें इसे बोने का अधिकार नहीं है यदि अधिकार होता तो ऐसे भारी विद्या ज्ञान दरिद्रता का दुःख सहते

जिसने कभी चोरी न किया हो वोही इसे बो सकता है, राजा कुछ देर तक ठहर बोला लड़काई में तो हमने भी अपने बाप का धन कई बार चुराकर खर्च किया है इस्से हम इसके बोने के अधिकार नहीं हो सकते, चोर ने कहा तो मन्त्री महाशय इसे बोएं मन्त्री ने भी जवाब दिया हम इतने बड़े राज काज में नियुक्त हैं कैसे कहें कि हमने कभी कुछ गबन न किया हो, तब चोर ने कहा तो अच्छा धर्माधिकारी इसे बोएं धर्माधिकारी ने जवाब दिया हमने लाखों मुकद्दमा फैसल किया है कैसे हो सकता है किसी में रिशवत न लिया हो, यह सब सुन चोर बोला सभी चोर हैं हमी ने क्या अपराध किया जो हमें प्राण दण्ड हो यह सुन सब लोग हंस पड़े राजा मुसकिरा कर बोला चोर तू दुराचारी होकर भी बुद्धिमान है इस्से तुझे प्राणदण्ड न होगा बरण हास्यरस में बड़ा प्रवीण है इस्से आज से हमारे दरबार में हाज़िर रहा कर।

४६—एक बार अकबर ने बीरबल को एक शरीफा दिया २ रे दिन जब बीरबल दरबार में गए अकबर ने पूछा बीरन शरीफा कैसा था यह बोले जहांपनाह क्या कहना बालदा शरीफा के दूध से भी ज़्यादह मीठा।

५०—एक आदमी किसी कलवार की दूकान में शराब पीए घरजाता था बीच में ठोकर खा गिर पड़ा और सिर में इतनी चोट आई कि रात भर पड़ा कराहता रहा २ रे दिन सबेरे फिर उसी कलार की दूकान पर आ बैठा इतने में एक दूसरा आदमी शराब लेने आया और बोला तेज़ से तेज़ शराब ला न हो पहिले नमूना देखला दे कैसी है ये बैठे थे सिर निहुरा कर बोले देखो यह तेज़ शराब का नमूना।

५१—एक सुस्त तमाशबीन अमीर ने किसी हकीम से पूछा कि गठिया की बीमारी की सब से अच्छी दवा क्या है ? हकीम ने जवाब दिया "चार आना रोज़ पैदा करके उसी पर गुज़रान करना ॥"

५२—एक लालाजी ने पहिली बार अपने लड़के को बिरादरी में एक के यहां मुरदना में भेजा लड़के ने बाप से पूछा कि वहां क्या कहना चाहिये पिता ने सिखाया कि जो दो चार आदमियों को कहते सुनो सो तुम भी कहने लगना दैवात् दोचार आदमी जो अर्थी के पीछे रह गये थे आपस में कहते जाते थे कि "अच्छा हुआ जो यह दुष्ट मर गया इसने हमें बहुत सताया था आगे बढ़ कर मुर्दे के बेटों के सामने वह भी आन कर यही कहने लगा । जब दूसरे दिन घरवालों से और उस लड़के के बाप से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने उलहना दिया कि आप का लड़का ऐसा अयोग है कि १० बिरादरी वालों में ऐसा कलमा हमारे बाप को बुरा भला कहता था आपने बड़ी गम्भीरता से यह सुन कर कहा लालाजी यह बड़ा नालायक लड़का है मैं अब उसे कभी आप के यहां न भेजूंगा जब कोई ऐसा काम आप के यहां आन कर पड़ेगा तो मैं खुद हाजिर हूंगा यह सुन कर वह बोले कि वाह बाप बेटे से भी अधिक बुद्धिमान है बेटेने तो मुर्देहीकी निन्दा की परन्तु यह जीवतों का ही मरना बिचारे हैं ।

५३—किसी ने एक लड़के से पूछा चांद और सूरज में तुम किस को बड़ा समझते हो, लड़का बोला "चांद को" क्यों कि जब दिन को रोशनी की जरूरत नहीं रहती तब सूर्य

रोशनी देता है पर चान्द रातको रोशनी देता है जब कि उसकी सबको ज़रूरत रहती है ॥

५४—एक गृहस्थ की सात आठ लड़के थे एक आदमी ने उसने कहा "मेरी क़िस्मत कुछ ऐसी फिरी है कि मुझसे एक रुपया भी नहीं पैदा होता ॥" "वह आदमी बोला।" "तब चार चार लड़के तुमने कैसे पैदा किए" ॥

५५—"पोष्टमास्टर साहब कोई चिट्ठी मेरे नामकी आई है?" "जनाब आपका नाम" "अह! भलाहो सा है!—आप मुझे क्यों तकलीफ़ देते हैं लिफाफे ही पर देख लिजिए।

५६—(बहुत खफ़ा होकर) "क्यों साहब कल आप सभासे कहते थे कि मेरे छोटे भाई को पीर बखूश के कुत्ते किसी अक़ल है" (मुसका कर) "नहीं तो मैं ने तो कहा था कि पीर बखूश के कुत्ते के आप को भाई से कहीं अकल जियादा है॥"

५७—एक आदमी ने परमेश्वर से सवारी को घोड़ा मांगा उसी दिन संयोग से फौजके वास्ते बहुत से लोग बेगार में पकड़े गये और वह आदमी भी पकड़ा गया, फौज में किसी घोड़ी को एक बच्चा हुआ था और वह बच्चा उसी आदमी के सिर पर लादा गया उस ने आकाश की ओर हाथ उठाया और कहा "हे ईश्वर तूं इतना बड़ा है पर तुझ को कुछ बुद्धि नहीं है मैं ने सवारी को घोड़ा मांगा था उसका अर्थ यह नहीं था कि घोड़ा मेरे उपर सवार हो।"

५८—किसी ने सवारी के वास्ते परमेश्वर से बड़ि प्रार्थना से एक घोड़ा मांगा तो नित्य सांझ और सवेरे यही प्रार्थना करता। जिस महल्ले में वह रहता था उस महल्ले में संयोग से रीचो

हुई और राजा के सिपाही लोग संदेह से उस बिचारे को पकड़ ले गए, राजा ने भी स्नम से उसी को चोर ठहराया और हुक्म दिया कि इस का काला मुंह कर के गधे पर चढ़ाओ जब बेचारा गधे पर चढ़ कर चला तो परमेश्वर से कहने लगा कि वाह परमेश्वर कितने दिन ईश्वरता करते हुए पर अब तक घोड़े और गधे को न पहचाना ।

५६—एक आदमी की घोड़ी गाभिन थी एक दिन उस को लेकर आप जंगल में गये, जब घास लेकर लौटे तो सोच बिचार कर घास का गट्ठा घोड़ीपर न लाद कर अपने सिर पर रख लिया और घोड़ी पर चढ़ के चले॰ लोगों ने पूछा यह क्या तो आपने जबाब दिया कि घोड़ी गाभिन है इस से जिस में इसपर बहुत बोझ न पड़े. इस वास्ते घास की गठरी हमने सिर पर रख ली है ।

६०—एक मेम साहिब अदालत में गईं और जज से कहने लगी मैं अपने शौहर को तिलाक देना चाहती हूं। जज ने पूछा क्या तुम्हारा शौहर तुम को तकलीफ देता है ? "नहीं" फिर क्या बात है ? क्या वह शराब पीता है ? नहीं ? तो क्या वह बद चलन है ? "हां" इस का सबूत ? यही कि मेरे तीन लड़कों में से सबसे एक भी उस से नहीं है ।

६१—एक मेम साहब बेतकल्लुफ मेज पर के सब मेवे खाए जाती थीं और साहब बेचारे बैठ मुंह देखते थे । आखिर साहब से न रहा गया और बोले इञ्जील में होवा कि खुदावन्द जी का किस्सा बेशक सच है । आपके इस वक्त के भकोसने से मुझे "साक्षात" होवा की झांकी होती है ।

६२—एक छतरानी नवयौवना सुन्दरी चतुरी चरफरी बसन्त ऋतु में अपनी बहनेली के यहां गई और कुछ इधर उधर की मन लगन बातें कररही थी कि प्यासी हुई और पानी मांगा इसकी उस मुंह बोली बहन कोरे कुल्हड़े में ला दिया जो इसने मुंह लगाकर पिया तो कुल्हड़ा होंठों मे लग रहा यह खिल खिला कर हंसी और इस दोहे को पढ़ने लगी। "रैमाटी के कूल्हड़ा तोहि डारों पटकाय। होठ रखे हैं पीउ कों तू क्यों चमे जाय॥ यह दोहा सुन उस को बहनेली ने कुल्हड़े को ओर से उत्तर दिया। " लात सही मूकी सही उचटे हे कुदार। इन होठन के कारनें सिर पर धरे अंगार।।"

६३—मथुरा में बदले बिना व्याह होई नायं सकै, एक बिरीयां एक चौबे जू ने बदल्ल में लुगाई बहोतई छोटी पाई॰ कन्धा पैं चढ़ाए सड़क मैं लिए जात हते॰ काऊ दिल्लगीबाज जिजमान ने पूछी 'चौबे जू का छोरिये लिए जाओ हो॰' चौबे जू ने जुबाब दियो "जजमान छोरी छोरा सब याई में हैं।"

६४—कृष्णप्रसादने दामोदर से कहा। "तुमने हमारा भेद क्यों खोल दिया" हा हा!! इसको तुम भेद खोलना कहते हो? जब हमने जाना कि हम उस को नहीं छिपा सकते तो हमने क्या बुरा किया कि उस भेद को ऐसे आदमी से कह दिया जो उसे छिपा सकता था"

६५—एक नामुराद आशिक से किसीने पूछा। "कहो जी तुम्हारी माशूक़ः तुम्हे क्यों नहीं मिली" बिचारा उदास हो-कर बोला " यार कुछ न पूछो मैंने इतनी खुशामद की कि

उसने अपने को अब सुब परी समझ लिया और हम आद-मियों से बोलने में भी परहेज किया"।

६६—एक ने कहा "न जाने इस लड़के में इतनी बुरी आदतें कहां से आई ? हमें यक़ीन है कि हम से इसने कोई बुरी बात नहीं सीखी" लड़का झट से बोल उठा "बहुत ठीक है क्योंकि हमने आप से बुरी आदतें पाई होतीं तो आप में बहुत सी कम हो जातीं"

६७—कहते हैं कि मिल्टन की बीबी निहायत बद-मिज़ाज थी। मगर खूब सूरत भी हद से ज़ियादा थी लार्ड बकिंग हैम ने एक रोज़ मिल्टन के सामने उसकी नज़ाकत की तारीफ़ कर के गुलाब के फूल के साथ उसकी तशबीह (उपमा) दी। मिल्टन ने कहा कि गोकि मैं अंधा हूं और नज़ाकत को नहीं देख सकता तो भी आप के बात की सचाई पर गवाही देता हूं। हक़ीक़त में वह गुलाब का फूल है क्योंकि कांटे अक्सर मेरे भी लगते रहते हैं॥

६८—एक डाक्टर साहिब कहीं बयान कर रहे थे कि दिल और जिगर की बीमारियां औरतों से मर्दों को ज़ि-यादा होती है। एक जवान खूब सूरत औरत बोल उठी "तभी मर्द्द औरतों को दिल देते फिरते हैं।"

६९—एक शख्स ने किसी से कहा कि अगर मैं झूठ बोलता हूं तो मेरा झूठ कोई पकड़ क्यों नहीं लेता। उस ने जवाब दिया कि आप के मुंह से झूठ इस क़दर जल्द निकलता है कि कोई उसे पकड़ नहीं सकता॥

७०—एक शख्स वकालत के इमतिहान के लिये तैयारी

कर रहे थे इस लिये उन्होंने एक उस्ताद से मन्तिक पढ़ना शुरू किया और पांच सौ रुपया उस्ताद को देने का करार किया जिस में से आधे रुपये पेशगी दे दिये और बाक़ी की निसबत यह शर्त की कि वकालत की सनद पाकर जिस वक़्त अव्वल मुक़द्दमा जीतूंगा उस वक़्त अदा करूंगा। उस शर्त पर मन्तिक़ पढ़कर हज़रत वकालत के इम्तिहान के कामयाब हो गये मगर मुद्दत तक न तो अदालत को गये और न उस्ताद के सामने आये। जब उस्ताद ने देखा कि इन हज़रत की नीयत बाक़ी रुपया देने की नहीं है तो नालिश करदी। जब अदालत में इज़हार देने के वक़्त मुक़ाबला हुआ तो उस्ताद बोले कि बच्चा रुपया तो तुम से मैं हर सूरत में लूंगा—अगर मैं जीता तो अदालत दिलवा देगी—और अगर तुम जीते तो तुम्हें शर्त के मुवाफ़िक़ देना पड़ेगा, क्योंकि अौवल मुक़द्दमा जीतने पर रुपया अदा करने का तुमने वादा किया है। शागिर्द ने (जिस पर मिसरा सादिक आता है "उस्ताद जो आफ़त है तो शागिर्द ग़ज़ब है") जवाब दिया उस्ताद मैं आप को एक कौड़ी देवाल नहीं हर सूरत में मेरी ही जीत है—अगर मैं जीता तो आप को अदालत न दिलवायेगी—और अगर हारा तो शर्त के मुताबित न दूंगा, क्योंकि शर्त तो यह है कि जीतूं तो दूं न कि हारूं तो दूं ॥

७१—एक वकील ने बीमारी की हालत में अपना सब माल और असबाब पागल दीवाने और खिड़ियों के नाम

लिख दिया । लोगों ने पूछा यह क्या तो उसने जवाब दिया कि यह माल ऐसे ही आदमियों से मुझे मिला था । और अब ऐसे ही लोगों को दिये जाता हूं ॥

७२—एक काने ने किसी आदमी से यह शर्त बदी कि जो मैं तुम से जियादा देखता हूं तो पचास रुपया जीतूं और जब शर्त पक्की हो चुकी तो काना बोला कि जो मैं जीता, २ रे ने पूछा क्यों ? इस ने जवाब दिया कि मैं तुम्हारी दोनों आंखे देखता हूं और तुम मेरी एकही ॥

७३—एक सौदागर किसी रईस के पास एक घोड़ा बेचने को लाया और बार २ उस को तारीफ़ में कहता " हुजूर यह जानवर ग़ज़ब का सच्चा है " रईस साहिब ने घोड़े को खरीद कर सौदागर से पूछा कि घोड़े सच्चे होने से तुम्हारा क्या मतलब है । सौदागर ने जवाब दिया " हजूर जब कभी मैं इस घोड़े पर सवार हुआ इसने हमेंशा गिराने का खौफ दिलाया और सचमुच इसने आजतक कभी झूठी धमकी न दी "

७४—हाईकोर्ट के एक वकील साहब अपने स्पीच के जोर में ऐसे बढ़ चढ़ चले कि जमीन को छोड़कर आसमान की बातें करने लगे जज्ज ने घबड़ा कर अपना रूल टेबल पर पटका और बोले बस साहब बस अब आप हमारी हुकूमत के बाहर होगए, भला सरकार का राज छोड़ कर किसी २ रे राज में चले जाते तब तो हम को सुनने का अख्तियार हो न था कहां अब तो आप इस दुनियां के ही बाहर पहुंचे ॥

७५—"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" श्रेटोनाफ़ ७वें लूइस का मुसाहिब बड़ा ही बुद्धिवान था, जब वह आठ नौ बरस का था एक पादरी ने उस से पूछा "लड़के जो तुम बतला दो कि खुदा कहां रहता है तो मैं तुमको एक नारङ्गी दूं" लड़का चटसे बोला " साहिब अगर आप बतलादें कि खुदा नहीं कहां है तो मैं आप को दो नारंगी दूंगा। ऐसेही श्री रामचन्द्र से बालमीकि जी ने कहा है।

दो० पूछेहु मोहि रहौं कहां, मैं पूछत सकुचाउं।
जहां न होइ तह देहु कहौं, तुमहीं देखाओं ठाउं॥

७६—लार्डकैमस अक्सर अपने दोस्तों से एक शख्स का क़िस्सा बयान किया करते थे जिसने उनके मुलाक़ाती होने का बड़ा पक्का पता बतलाया था। लार्ड साहिब जिन दिनों जज थे एक बार कहीं सफर में राह भूल गये और एक आदमी से जो सामने नज़र पड़ा दर्ख्वास्त की कि भाई जरा हमें रास्ता बता देना। उसने बड़ी मुहब्बत से जवाब दिया, हुज़ूर मैं निहायत खुशी से आप की खिदमत के लिये हाजिर हूं क्या हुज़ूर ने मुझे नहीं पहचाना? मेरा नाम जानते हैं और मैं एक बार बकरो चुराने का इल्लत में हुज़ूर के सामने पेश होने की इज्ज़त हासिल कर चुका हूं।" अहा जान मुझे खूब याद है, और तुम्हारी जोरू किस तरह है? उस ने भी तो मेरे सामने पेश होने की इज्ज़त हासिल की थी क्योंकि उसने चोरी की बकरियों का जान बूझ कर घर में रख छोड़ा था"।—"हुज़ूर के इक़बाल से बहुत खुश है, हम लोग उस बार काफ़ी सबूत न पहुंचने से छूट गये थे अबतक हुज़ूरकी बदौलत वही पेशा किये जाते हैं।"—लार्ड

केमूस बोले "तब तो हम लोगों को एक दूसरे की मुलाक़ात की फिर भी कभी इत्तफ़ाक़ हासिल होगी।"

७७—एक अन्धा बैरागी काशी के बीच मनिकर्णिका का घाट पर बैठ गहन में दही पेड़ा खा रहा था, कि देख कर किसी पण्डित ने पूछा, सूरदास जी! यह क्या करते हो? बोला महाराज दही पेड़ा खाता हूं, कहा गहन में? उत्तर दिया बाबा मेरे गुरु की दया से सदा ही गहन है यह सुन पण्डित हंस कर चुप हो रहा।

७८—किसी साहिब ने अपने बैरागी से कहा कि क्यों बाबू इस साल "आख़िरी सनीचर" की तातील न हुई। बैरागी साहिब किस मुस्तैदी से कहते हैं कि हज़ूर "आख़िरी सनीचर" के रोज़ इतवार था।

७९—एक मजलिस में बहुत से लोग एक से एक तकल्लुफ़ में बढ़ कर बैठे थे। ख़िदमतगार हुक़्क़ा भर कर लाया और एक सिरे से पूछना शुरू किया। पहले ने दूसरे शख़्स की तरफ़ इशारा करके कहा कि क़िबला पहले आप नोश फ़रमाइये उन्होंने जवाब दिया कि क़िबला पहले उधर ही से होता आवे। इसी तरह ख़िदमतगार तमाम घूम आया सबने अपने नज़दीक के साहिब की तरफ़ इशारा करके कहा कि क़िबला पहले उधर ही से होता आवे। ख़िदमतगार तंग होकर बीच मजलिस में बैठ कर हुक़्क़ा पीने लगा। मालिक ने ख़फ़ा हो कर ख़िदमतगार पर ग़ुस्सा ज़ाहिर किया और हुक्म दिया कि इस बेअदब को दस जूते मारो। ख़िदमतगार ने साहिबान मजलिस की तरफ़ इशारा करके

मालिक ने कहा कि किबला पहले उधरही से होता आवे।

८०—एक दिन एक जगह कई एक वैद्य, डाकटर, और हकीम जमा हुए, इधर उधर की बातें होने के अनन्तर यह प्रसंग चला कि भाई! आज कल रोज़गार नहीं, क्या करें?

वैद्यजी। चंडी चेतानी चाहिये, जो शहर भर में खल बल मच जाय।

हकीम। मेरी राय में लोगों को जुलाब का ओकडेकर पहले जाँफ कर दीजिये, फिर रोज रोज़ अन वाय किस्म की बीमारी उन्हें हुआ करेंगी।

डाक्टर हमारी राय में म्यूनीसिपल कमेटी सर्कार से जुल्म करके पटवा दी जायें तो फिर लड़के वालों तक चैन उड़ाया करेंगे।

इतने में एक इनके कर्त्तव्य से जले भूने साहब तड़ाक बोल उठे, क्या खूब! आप थोड़ी सी आमदनी के लिये इतना तरद्दुद करते हैं, मेरी राय में आप लोग अगर काला-पानी रसीदा कर दिये जायें तो बहुत बहतर हो, आप भी बचें, चैन की बरी कराई जाये, और हम लोग भी आपकी कारस्तानी से बचें! वाह भाई! खूब—सोची!

८१—एक कवीश्वर से एक अपराध हुआ। इस पर राजा ने आज्ञा दी, इस को मेरे सन्मुख मार डालो। कवीश्वर प्राण के भय से थर २ कांपने लगा। तब राजा के साथ का एक चिरौरिया बोला, यही बड़ी कायरी है, पुरुष कभी नहीं भय खाते। उसने कहा यदि तू वैसा है तो मेरे ठांव आ, और मैं तेरे ठांव आऊं। राजा को यह बचन मन में

आया, और हंसकर उसका अपराध क्षमा किया, उस ने छुट्टी पाई और इस ने लज्जा।

८२—एक नाई किसी वैद्य के पास जाकर कहने लगा कि मेरा पेट दुखता है कोई औषधि दीजिये। उस ने पूछा कहो आज तुमने क्या खाया था? कहा और तो कुछ नहीं एक जली रोटी। तब वह उस की आंखों में दवा लगाने लगा। नाई बोला पेट के दुःख को आंख से क्या सम्बन्ध? वैद्य ने कहा पहिले आंखों की दवाई करनी चाहिये, क्योंकि यदि ये अच्छी होती तो तुम जली हुई रोटि कभी नहीं खाते।

८३—एक वैद्य जब गोरस्थान में जाता तब पिछौरी से अपने शिर और मुख को छिपाता। अकस्मात् एक दिन लोगोंने उस से पूछा इस का क्या हेतु है? उसने उत्तर दिया मुझे इस गोरस्थान के मरे हुये लोगों से बड़ी लज्जा आती है क्योंकि ये सब मेरी औषधि खा के मरगये हैं॥

८४—एक कङ्गाल कवीश्वर एक धनवान के यहां जाके ऐसा झगड़ कर बैठा जो उसमें एक बिलस्त का बीच था इसलिये धनवान ने बहुत क्रोधित होकर पूछा, तुझ में और गदहे में क्या बीच है? कहा एक बिलस्त। तब धनवान ने इस उत्तर से अति लज्जित हो कर क्षमा चाहो। ठीक है।

कुण्डलिया।—सांई ये न बिरुद्धिये, गुरु पण्डित कवि· यार। बेटा बनिता पौरिया, यज्ञ करावन हार॥ यज्ञ करा· वन हार राज मंत्री जो होई। बिप्र परोसी बैद आप को तपै रसोई। कह गिरधर कबिराय यहै कैसो समझाई। इनते रहती तरह दिये बनि आवै सांई॥ १॥ और भी

दो०—कवि गुरु आश्रित प्रेमी जन, बंधू वोर हित कारी। मूर्ख बधू सम्बन्धि सों, नहीं करु बाद बिचारि॥ १॥ और भी मानस आरण्य कांड में लिखा है। चौ०—तब मारिच हृदय अनुमाना। नवही बिरोध नहीं कल्याना॥ शस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी। वैद्य बंदी कवि मानस गुनी॥

८५—एक भिखारी ने किसी धनवान के द्वार पर जाकर कुछ मांगा। तब उस के घर में से किसी ने उत्तर दिया कि बीबी घर में नहीं हैं। यह सुन कर मंगते ने कहा मैं ने एक टूक रोटी मांगी थी और कुछ बीबी को नहीं मांगा था जो ऐसा उत्तर पाया॥

८६—कोई पोस्ती जङ्गल में बैठा कटोरी में पोस्त घोल रहा था। दैवात किसी झाड़ झूड़ से एक खरगोस जो निकल के दौड़ा, तो उस के धक्के से इसकी कटोरी लुढ़क पड़ी यह झुञ्झला कर बोला, कि तुझ से क्या कहें तेरे बाप ही से जाकर कहें गे, इतना कह कूंड़ी सोंटा कांख में दबा, नगर में जा हर एक चोपाया को देखता चला, निदान एक गधे को जो उस के बरन के समान था पाया तो गधे के पास जा उस की पीठ पर हाथ रख कर चाहे कि कुछ कहे, त्योंहीं उस ने फिर कर एक ऐसी दुलत्ती मारी कि यह बिचारा हाय कर बैठ गया, और हंस कर बोला कि क्यों नहीं जिस का बाप ऐसा हो, उसका लड़का वैसा हुआ हो चाहे इतना कह चला आया।

८७—सुनते हैं कि इबराहीम अहमद की सेज सदा मन फूलों से संवारी जातीथी एक दिन बांदी ने सेज बना.के

अपने जीमें विचारा कि इस बिछौने पर सोने से कैसा सुख जी को होता होगा यह सोच इधर उधर देख वह जो उस पर लेटी तो सुख पाके बेहोश हो सोगई और फूलों के बीच छिप गई, पहर एक पीछे बादशाह भी आ उसी पर लेट गया घड़ी दो एक पीछे उसने जो करवट लिया, शाह घबरा कर उठ खड़े हुए और बोले कि देखो इस खाट में क्या आ-फत है? एक के कहते दस दौड़ आए और उन्होंने बांदी को निकाल बाहर किया, देख कर महाराज ने कहा कि इस मुई को मेरे साम्हने सौ कोड़े मारो बात के कहते ही लोगों ने बेपीर हो सौ कोड़े गिनकर लगाए, उस ने पचास हंस हंस कर और पचास रो रो कर खाए, यह कौतुक देख कर बादशाह ने उसे पास बुलाकर पूछा कि सुनतो! मार खाने से आदमी रोता है तू जो हंसी और रोई इस का क्या का-रण? बोली महाराज। फूलों की सेज पर पहर भर सोने का दण्ड पर प्रमेश्वर के यहां नहीं यहां ही हुआ, इस बात को सोचके मैं हंसी और आप को परमेश्वर के यहां इस सेज पर नित सोने का न जानूं क्या दण्ड होगा? यह सोचकर के रोई, कहते हैं कि इबराहीम अहमद इस बात के सुनते ही राज छोड़ फकीर हो गया॥

८८—किसी पण्डितने एक बड़े बगुला भगत से पूछा कि तुमने इतने दिनों तक कथा सुनी क्या समझा? आप बोले महाभारत का यह सार है कि मर जाना, पर भर सुई भर ज़मीन को न देना, रामायण का फल यह है कि सर्वनाश हो जाय, पर परस्त्री नहीं छोड़ना। रही भागवत

उसका अर्थ यहहै कि मद्यपान करके आपुस में कट जाना। पंडित जोने भगत जी के पांव छूकर कहा धन्य ? ऐसी समझ कहां ?

८९—एक पण्डितजी अपने किसी साथी से न्याय की फक्किका बूझते चले जाते थे, राह में एक हंसोड़ लड़का अपने से भारी आलू का बोझ एक धरम धीरे पर रक्खे खड़ा था, पण्डित जी को देख कर बड़े चाव से बोला। पण्डितजी महाराज मेरा बोझ उठा दीजिये,पण्डित जी एक तो दुबले आदमी २ रे पण्डिताई की ठसक और बोझ भी इतना जो उनके ऐसे२ चार से न उठे झुंझला कर उस लड़के से बोले 'पण्डितों का काम क्या बोझ उठाना है ? और फिर बोझ भी एक छकड़ा ?' लड़का हाथ जोड़ कर बोला "मैं तो किताब के इस लेख को सच जाना था कि विद्या से बड़ा कोई बल नहीं पर आज से आपके कहने से झूठ मानूंगा॥"

९०—बलायतका वर्ल्ड अखबार लिखता है कि हाल में एक मेम साहिब लोगों को बड़ी चलाकी के साथ अपनी उमर का हिसाब समझा कर अपने सिन को हद से जिआदा घटा रहीथी उनकी लड़की निहायत हाज़िर जवाब थी उस से न रहा गया और बात को काटकर बोल उठी, अम्मा भला अपनी और मेरी उमर में कम से कम नो महीने का फ़र्क तो छोड़ दो॥

९१—एक भले आदमी से किसी ने पूछा (औरतों के पेट में भी कोई बात पच सकती है"उसने जवाब दिया हां" (सिर्फ़ एक बात) (कौनसी) "उनकी उमर !!"

६२—मिल्टन से किसी ने पूछा "आप अपनी लड़कियों को के ज़बान सिखलाइयेगा ?" उस ने जवाब दिया "औरतों को एक ही ज़बान अच्छी होती है"

६३—जाड़े के दिनों में एक खुश मिज़ाज किसी महाजन के यहां एक हुण्डी का दाम लेने गए, महाजन ने कहा "अभी इसको मिती पूजने को बहुत दिन बाक़ी है आप बोले बहुत दिन बाक़ी है यह हम भी जानते हैं मगर जाड़े का मौसिम है दिन बहुत जल्दी बीत जायगा इस से अभी से इस को फ़िकर कीजिये"

६४—एक भले आदमी ने किसी हकीम से पूछा सुंघनी से दिमाग को कुछ नुकसान तो नहीं पहुंचता ? हकीम ने जवाब दिया हरगिज़ नहीं क्योंकि जिनको कुछभी दिमाग है वे सुंघनी सूंघते ही नहीं ॥

६५—कोई पीपल के नीचे लघु शङ्का किया करता था, ब्राह्मणों ने मना किया न माना फिर अधिक तर बरजन किया तो क्रोध कर कहने लगा कि सब वृक्ष बराबर हैं। एक ब्राह्मण युक्त बोलने वाले ने कहा कि तुम्हारी जोरू और तुम्हारी मा में क्या भेद है वह भी बराबर है सुनके लज्जित हो गया।

६६—एक मीयां साहेब परदेश में सरिस्तेदारी पर नौकर थे कुछ दिन पीछे घर का एक नौकर आया और कहा कि मीयां साहब आप की जोरू रांड हो गई मीयां साहब ने सुनते ही सिर पीटा रोए गाए बिछौने से अलग बैठे सोग

माना लोग भी मातम पुरसी को आए उन में उनके चार पांच मित्रों ने पूछा कि मीयां साहब आप बुद्धिमान हो के ऐसी बात मुंह से निकालते हैं भला आप के जीते आप की जोरू कैसे रांड होगी? मीयां साहब ने उत्तर दिया—भाई बात तो सच है खुदा ने हमें भी अकिल दी है मैं भी समझता हूं कि मेरे जीते मेरी जोरू कैसे रांड होगी पर नौकर पुरा ना है झूठ कभी न बोलेगा यह सुन के सब कोई हंस पड़े॥

९७—एक बुढ़ा मनुष्य जिसकी कमर बुढ़ापे से झुक गई थी कुबड़े की भांति हाट में चला जाता था एक मसखरे ने पूछा कि "बड़े मियां क्या ढूंढ़ते जाते हो" बूढ़े ने उत्तर दिया कि "बेटा मेरी जवानी खो गई है उसी को ढूंढ़ता हूं मसखरे ने कहा कि बड़े मियां झूठ क्यों बोलते हो क्यों नहीं कहते कि कबर के लिये जमीन ढूंढू हूं॥

९८—एक चौबेजी की बान थी कि जब बूटी छानते १ले शिवजी पर चढ़ा पीछे आप पीते शिवाला उन के घर से कुछ दूर पर था एक दिन भंग की तरंग में यह उमंग आई कि हम को शिवाले पर जाने में बड़ा कष्ट होता है इस्से महादेव जी को यहीं उठा लावें, यह ठान शिवाले पर जा एक गोल पिंडी नर्मदा की उठाली, और ले चले पुजारी ने पूछा कि चौबेजी यह क्या करते हो चौबे ने उत्तर दिया कि यहां तो यह थोड़ी भंग पीते हैं मैं इन्हीं से भंग रगड़ा करूं-गा जिस्से मनमानती भंग पिया करें॥

९९—एक मनुष्य ठीक मध्यान्ह समय अपने मित्र के यहां मिलने गया उसके मित्र ने उसे दूर से आते देख अप-

ने नौकर से कहा कि जब वह मनुष्य आवे और मुझे पूछे तो उससे कहना कि वह घर में नहीं है। किसी मित्र के यहां भोजन करने गया है। थोड़ी देर में वह आ पहुंचा और नौकर से पूछा कि घर का मालिक कहां है। नौकर ने कहा कि वह घर में नहीं है, किसी के यहां भोजन करने गया है। यह सुन उस मनुष्य ने कहा वह बड़ा बेवकूफ़ है जो ऐसी गरमी में बाहर गया है। यह बात सुनकर मालिक से न रहा गया खिड़की खोल गरदन निकाल उस से कहने लगा कि तू ही बड़ा बेवकूफ़ है जो ऐसी कड़ी धूप में भटकता फिरता है। मैं तो अपने घरही बैठा हूं॥

१००—किसी महफिल (सभा) में एक काली कलूटी रण्डी नाच रही थी जब नाच चुकी, किसी ने पूछा कि बीबी आप का इस्म शरीफ क्या है। बीबी ने उत्तर दिया कि जनाबवन्दी को मिसरी कहते हैं। फिर मियां ने कहा कि किस बेवकूफ़ ने आप का नाम मिसरी रक्खा है। तुम तो शीरा हो बीबी ने हंसकर उत्तर दिया कि खैर साहब आप की हमशीरा हो सही॥

१०१—एक बुढ़ा कमर झुकाए लाठी लिए बाजार में चला जाता था राह में किसी ने पूछा कि यह कमान तुम ने कितने को लिया है। उसने उत्तर दिया कि थोड़े दिन सबर करो यह तुम्हे आपसे आप मिल जायगी॥

१०२—एक जाट बाजार में दाल मोट वाले से एक पैसे की दाल मोंट मांगी उसने बानगी समझ एक ही फांका मार गया। और कहने लगा कि ला तोल दे उसने कहा

कि दे तो दिया। जाट बोला कि सारे सवासेर तो पैसे की आवे हैं तू इतनो क्यों देता है ॥

१०३—एक दिन नवाब सैफ़ और उसका बेटा दोनों हाथी पर चढ़े जाते थे किसी अतीथ ने कुछ मांगा, हे बाबा सैफ़ एक आध चिट्ठा इस अतीथ को भी दिला। नवाब ने तो सुनकर मूंह फेर लिया पर उसके बेटे ने एक मुहर थैली मे निकाल अतीथ को दी। तब अतीथ प्रसन्न होकर बोलाकि सैफ़ तो पट पड़ो नौमचे ने काट किया।

१०४—कोई भला आदमी किसी छात्र के मुख मे एक पण्डित की विद्या की प्रशंसा सुनकर स्पृहो हो उस के घर भेंट को गया वह अपने द्वार पर बैठा पोथी देखता था यह प्रनाम कर उन के सों ही संकोच से बैठ बोला धर्मावतार यह कौन सी पोथी है उत्तर दिया तू कौन है जो मुझ से पूछता है कहा आप का सेवक हूं बोला जा तुझे इस के समझने की सामर्थ नहीं इस ने कहा भला जाना गया कि आप दैवी विद्या की पोथी देखते हैं कि जिस मे बिन भेंट आप ने मेरी सामर्थ जान ली इस बात को सुन वह लज्जित हो बोला नीति शास्त्र की पोथी है तब इसने हंस कर यह कहा कि आप इसी से ऐसे सुशील हैं और अपनी बाट लो।

१०५—राजा सवाई जय सिंह ने मथुरा में अबदुन्नबीखां की मसजिद की गुमटी की ऊंचाई देख कर कहा कि इस पर से कोई कूदे तो सहस्त्र मुद्रा दूं यह सुनकर एक चौबे ने पूछा कि महाराज जो यापै तें कूदे गो वाहि सहस्त्र रुपया देउगे कहा हां इतनी बात के सुनते ही वह चौबे अपने

घर जा एक बुढ़िया सौ बरस की कंठगत प्रान हो रही थी उसे ले आया उसे देख राजा ने कहा इसे क्यों लाये हो? बोला यही गुमटी पर से कूदेगी सहस्र रुपया देउ राजाने कहा बुढ़िया की छोड़ नहीं, उत्तर दिया महाराज आप कौं बूढ़ी बार तें कहा काम तुम्हें एक हत्या लेनी है सो लेउ और स्रोकौं सहस्र रुपया देउ इस रहस और अवसर की बातो से प्रसन्न हो राजाने उसे रुपये दिलवा दिये वह ले अपने घर गया॥ ठीक है दो०—फीकी पै नीकी लगी, कहिये समैं बिचारि। सब के मन हर्षित करै, ज्यौं बिवाह मैं गारि॥ १॥

१०६—सूरजमल्ल के समय में किसी मुसलमान ने ठठ्ठे से एक जाट से कहा अबे जाट बेजाट तेरे सिर पर खाट उसने कहा अबे मियां बमियां तेरे सिर पर कोल्हू, यह बोला तुक न मिली, उसने उत्तर दिया कि तुक न मिली तो कहा भयो बोझन तो मरैगो॥

१०७—एक मनुष्यने अंधे से पूछा, तुम खीर खाओगी? उस ने कहा, खीर कैसी होती है? कहा, स्वेत होती है। फिर अंधे ने उसे पूछा, स्वेत कैसा होता है? तब उस ने कहा, जैसा बगला। अंधे ने पूछा बगला कैसा होता है? उस ने अपना हाथटेढ़ा करके कहा, ऐसा होता है। अंधेने ठठोल से कहा, ऐसी खीर न खाऊंगा, कण्ठ में अटक जावे तो मैं मर जाऊंगा॥

१०८—एक मुगल बिलायत का जनमा हिन्दुस्तान में आकर बड़ा धनी हुआ। एक दिन उस के यहां नाच होता

था, रंडियां यह गीत गारही थी, रंगीली छबीली दुलहन। किसी ने पूछा, आगा साहेब, आप बूझते हैं यह क्या गाती हैं? कहा हां, मैं क्यों नहीं बूझता हूं? दो वर्ष से हिन्दुस्तान में हूं? ये गाती हैं छबीली रंगीली अर्थात् छः रंगीलीं बिल्लीं॥

१०९—नादिर शाह जब शाहजहांबाद (दिल्ली) में पैठा तब उसकी सैना में से कितने मुगल नगर के फिरने को गये। उन्हीं में एक भूखा था, अकस्मात् किसी साबन की हाट में साबन के बड़े २ ढेले दिखाई पड़े कहने लगा, इन पनीर को चकतियों में से एक चकती तुरंत मुझि दे, मैं बहुत भूखा हूं। साबन वाला बोला, आगा, साहेब यह साबन है पनीर नहीं। तब झुंझला कर मुगल ने कहा, रे दुष्ट। तू ठीक नहीं कहता है। जब उसने देखा कि यह बुद्धि का अन्धा मानेगा नहीं तो एक डला साबन का दे दिया। उस ने एक बड़ा सा टुकड़ा तोड़ कर मुख में डाल लिया। जब सारा होंठ फट कर घिर गया तो घबरा के कहने लगा, हाय २ मेरा मुंह जल गया। यह देख कर हाट के लोग हंसने लगा और व्यङ्ग से कहा क्यों मिरज़ा साहेब? इस पनीर का स्वाद तो आपने खूब चखा? मुगल लज्जित होकर नार (गरदन) नीचे कर चला गया। ठीक है। कुण्डलिया—बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछताय। काम बिगारै आपनो जग में होत हंसाय॥ जग में होत हंसात चित्त में चैन न पावै। खान पान सनमान राग रङ्गकछु मनहि न भावै। कह गिरधर कबिराय दुख कछु टरत न

टारे खटकत है निय मांहि कियो जो बिना बिचारे ॥

११०—एक नाव में दो मनुष्य चढ़े। एक उन में नैयायक था, २रा पैराक। नैयायक ने पैराक से पूछा, क्यों मित्र तू ने कुछ न्याय शास्त्र भी सीखा है या नहीं? वह बोला, अब ताईं मैं ने न्याय का नाम भी सुना नहीं है, तो सीखने का क्या बात है? नैयायक ने सुनकर शोक कर कहने लगा कि तूने अपनी आधी आयुर्दा मूर्खता के समुद्र में डूबाई। इतने में आंधी आई। पैराक ने ठठोली से नैयायक को कहा कहो जी कुछ पैरना भी आप को आता है वा नहीं? बोला बिना न्याय के और कुछ नहीं आता। फिर उसने हाय २ कर कहा, तूने अपनी सारी बैस डूबाई।

१११—एक अन्धा अंधेरी रात में दीवट हाथ में और ठिलिया कान्धे पर लिये हुए हाट में चला जाता था। एक मनुष्य ने उसे पूछा रे उल्लू, तेरे निकट रात और दिन दोनों समान हैं दीपक से तुझे क्या लाभ? यह बात सुनकर अंधे ने हंस कर कहा, यह दिया मेरे लिये नहीं बरन तेरे लिये है, क्योंकि तू अंधेरी रात में मेरी ठिलिया न तोड़े।

११२—एक चित्रकार ने किसी नगर में जाके वहां वैदगी प्रारम्भ की। थोड़े दिन के पीछे एक मनुष्य उस के देश का वहां जा पहुंचा, और उसे देखकर पूछा, अब तू क्या काम करता है? उसने कहा वैदगी करता हूं। पूछा, किसलिये यह काम करता है? उत्तर दिया, इसलिये कि यदि इसे काम में कुछ भूल चूक प्रकाश होती है तो उसे माटी छिपाती है।

११३—एक राजा और मन्त्री दोनों छुहारे खाते थे पर राजा छुहारों की गुठलियां मन्त्री के निकट फेंकता था। फिर राजाने खाने के पीछे मन्त्री से कहा तू बड़ा खाऊ है, क्योंकि छुहारों की गुठली बहुत सी तेरे निकट पड़ी हैं। मन्त्री ने उत्तर दिया कि मैं ऐसा खानेहारा नहीं, बल्कि हे कृपा निधान बहुत ही खाऊ है क्योंकि छुहारे तो खाय और गुठली भी न छोड़ी।

११४—कईएक व्योपारियों ने एक राजाके यहां अपना अपना घोड़ा दिखाया और राजा ने भी देखते ही बहुत घोड़ों को प्रसन्नता पूर्वक मोल लिया और दो लाख रुपया मोल से अधिक देकर कहा कि अपने २ देश से फिर मेरे लिये अश्व अर्थात् घोड़ा लाइयो। व्योपारियों की बिदाई के पीछे एक दिन राजा ने आनंद की अवस्था में मंत्री से कहा कि सारे उल्लूओं का नाम लिख। मन्त्री ने निवेदन किया कि हे जगताश्रय मैं आप की आज्ञा से पहले ही लिख चुका हूं, और सब नाम के आगे आप का नाम है। यह सुन कर राजा ने पूछा तू ने ऐसा क्यों किया? मंत्री उत्तर दिया कि आपने व्योपारियों को बिना जाने बूझे दो लाख रुपये दे दिये और उनका बिचवैया भी नहीं लिया, यही चिन्ह उल्लू पन का है, राजा ने कहा यदि वे व्योपारी घोड़े लेकर आवें तो क्या हो? मंत्री ने कहा यदि वे घोड़े लेकर फिरे आवें तो आपका नाम उल्लुओं की पही से छील कर व्योपारियों का नाम भरती करूंगा।

११५—एक मनुष्य ने बड़ा पद पाया। तब एक मित्र शुभ वाद के लिये उस के यहां गया। उसने पूछा, तू कौन है? और क्यों आया है? उसके मित्र ने यह बात सुन अति लज्जित होकर कहा तू मुझे नहीं पहचानता? मैं तेरा पुराना मित्र हूं, और मैंने सुना था कि तू अन्धा हो गया है, इस लिये मैं तेरी शोक बारता पूछने के लिये आया हूं। ठीक "बिहारी सतसई" में लिखा है।

दोहा—कनक कनक तें सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वह खाय बौरात हैं, यह पाय बौराय॥ १॥

११६—एक मुनशी बाज़ार में बैठा हुआ चिट्ठी लिख रहा था। एक विदेसी आया और बोला मुनशी जी क्या लिखते हो। मुनशी ने उत्तर दिया कि भाई चिट्ठी लिखता हूं। उसने कहा मेरा भी सलाम लिख दिजिये। मुनशी जी ने कहा नहीं जी अर्ज़ी लिखता हूं। उसने कहा तो मेरी भी सही कर दीजिये। मुनशी उकताकर बोला कि तमस्सुक लिखता हूं। वह बोला तो मेरी भी गवाही लिख दीजिये। मुनशी ने सोचा यह तो कोई अनोखे ढंग का आदमी (मनुष्य) दिखाई देता है। पूछा आप का नाम क्या है। वह हंसा और बोला मेरा नाम है—मान न मान मैं तेरा मेहमान।

११७—किसी आस्तिक ने अपने पुत्र से जो नास्तिक था एक दिन कहा कि आज हमारे पिता का श्राद्ध है दूब लाओ पिण्डा पारे उसने कहा कि क्या होगा उसने कहा कि इसे वह खायगा और तृपित होगा यह सुन के वह चला गया और कुछ घास काटकर कई एक गाय की हड्डियां

इकट्ठो की और हड्डियों के आगे घास रखदी, जब बहुत बिलंब होगया और श्राद्ध का समय बितने लगा तब उसने जाके पूछा कि इतना बिलंब क्यों हुआ। उसने कहा कि हड्डियां के आगे घास तो रक्खा है जब खायगी तब दूह के दूध लाऊंगा। उसने कहा कि भला ऐसा भी कहीं हुआ है, तब उसने कहा कि भला मुर्दा भी कहीं पिण्डा खाया है, यह सुन के बिचारा लज्जित हो गया और यह दोहा पढ़ा।—

होय भले के सुत बुरो, बुरो भले के होय।
दीपक ते काजल प्रगट, कमल कीच ते जोय॥ १॥

११८—एक मनुष्य अपने चाकर से कहा कि जब तू बड़े तड़के एक ठांव दो काग बैठे देख, तब तुरन्त आके मुझे सन्देसा दे, मैं, उनको देखूं, और भला शकुन पाऊं। निदान वह दिन तो आनन्द से बीते २ रे दिन उसके नौकर ने एक ठांव दो काग को देख शीघ्र उसे खबर दिया कि हे कृपानिधान दो काग एक जगह पर बैठे हैं चल के देखिये और अच्छे शकुन पाइये, इतना सुनके वह बाहर जा के एक ही काग का दरशन पाया। अपने मन में सोचा कि देखो इस अज्ञान ने मुझ से छल किया और शकुन को भी भ्रष्ट किया निदान लगे उस को मारने कि उसी समय में एक मित्र ने कुछ खाने को भेज दिया, तब चाकर ने हाथ जोड़ कर, निवेदन किया कि हे बिचार सिन्धु आपने एक काग को देख के खाने को पाया, यदि दो काग देखते तो वहीं पाते जो मैंने पाया। यह सुन कर के बिचारे लज्जित होगये।

११९—एक मछुआ सदा नदी की मछली पकड़ता था और हाट में बेचता था। अकस्मात् एक दिन ऐसी जोती मछली पकड़ी कि वैसी कभी न धरी थी। तब उस मछुवेने अपने मन में विचार किया कि यदि इस मछली को हाट में बेचूं तो दो तीन पैसे से अधिक नहीं मिलेगा। पर राजाके सन्मुख ले जाऊं तो कुछ पारितोषिक मिलेगा। यह सोच कर उसने राजा के पास मछली को ले गया राजा ने देखते ही बहुत चाह की और प्रसन्न होकर आज्ञा दी कि मछुवे को १००) रु० दो मन्त्री ने उस समय उपस्थित था, कान में महाराज से कहा कि एक मछली के लिये इतना देना भला नहीं, तब राजा ने उत्तर दिया कि मैं कह चूका हूं जो न दिया जाय तो बड़ी लाज की बात है। मन्त्री ने कहा आप मछुवे से पूछिये कि यह मछ है वा मछली यदि मछली कहै तो मछ मांगिये और मछ कहै तो मछली मांगिये क्योंकि मछवा इस के समान का नहीं ला सकेगा और न पारितोषिक पावेगा। राजाने मन्त्री की बात मान ली और मछुवे से पूछा कि यह मछ है अथवा मछली ? यह बात सुन के मछुवा ने उत्तर दिया कि हे कृपासिन्धु यह नपुंसक है। राजा यह बात सुनकर बहुत हंसा और २००) रु० पारितोषिक दिया।

१२०—एक बुद्धिमान सदा मंठ में बैठ कर उपदेश करता था, और एक मनुष्य उस सभा में बैठकर सदा रोता था एक दिन बुद्धिमान ने कहा कि मेरे उपदेश इस मनुष्य के मन में बहुत ही प्रवेश किया है। इसलिये रोता है तब

दूसरे ने कहा कि मेरे मन में बुद्धिमान की बात कुछ प्रवेश नहीं करती, तू कैसा मन रखता है कि थोड़ीसी बात में रो देता है। उसने यह बात सुनकर उत्तर दिया कि बुद्धिमान की बात पर मैं नहीं रोता, मैंने एक बिधिया छाग पाला था और उसे बहुत मित्र जानता था, जब वह बूढ़ा हुआ। तब मर गया। इस से जिस समय बुद्धिमान बात करता है और उस की दाढ़ी हिलती है तब मुझे वह बधिया छाग स्मरण पड़ता है, क्योंकि उस की भी दाढ़ी ऐसी ही थी। सुन कर सब लोग खिलखिला कर हंसपड़े।

१२१—एक कवीश्वर ने किसी धनवान की स्तुति की, और उस से कुछ न पाया। फिर भड़ोआ किया तो भी धनवान ने कुछ नहीं कहा। २रे दिन कवीश्वर उसके द्वार पर जा बैठा, तब धनवान ने कहा हे कवीश्वर तूने स्तुति की, मैंने कुछ न दिया फिर भड़ोआ किया मैंने कुछ न कहा अब तू यहां क्यों बैठा है? उसनी उत्तर दिया कि अब मेरी इच्छा है कि तू मर जावे और मैं तेरा मृत्यु पाठ पढ़ूं।

१२२—एक मनुष्य ने एक लेखक के आगे जाके कहा, एक चिट्ठी लिख दे। उस ने कहा, मेरा पां दूखता है। तब उस ने कहा मैं तुझे कहीं भेजा नहीं चाहता हूं। तू क्यों ऐसा पेखना करता है? लेखक ने उत्तर दिया कि यह बात तेरी सच है, पर जब किसी के लिये मैं चिट्ठी लिखता हूं तब उस के पढ़ने के लिये मैं ही बुलाया जाता हूं क्योंकि २रा कोई मेरी चिट्ठी नहीं पढ़सकता है॥

१२३—एक मनुष्य चिट्ठी लिखता था इस में एक अन-

जान पुरुष उस के निकट बैठकर चिट्ठी को ओर देखने लगा। जब उसने अपने पत्र में यह लिखा कि एक विरान उल्लू पुरुष मेरे ढिग बैठ कर पत्र को पढ़ता था इस लिये मैंने कुछ भेद की बात नहीं लिखी, तब उस मनुष्य ने कहा तू मुझे उल्लू बूझता है ? तू किस लिये अपना भेद नहीं लिखता ? तेरा पत्र मैं ने नहीं पढ़ा लेखक ने उत्तर दिया कि यदि तूने मेरी चिट्ठी नहीं बांची तो कैसे जाना कि मैंने अपनी चिट्ठी में ऐसा लिखा है ?

१२४—एक दिन कोई राजा अपने मन्त्री के संग सिकार खेलने के लिये गया था कि वहां एक गेहूं का पेड़ मनुष्य के डील से बड़ा देख कर आश्चर्य्य से कहा कि ऐसा दरख्त मैं कभी नहीं देखा था । मन्त्री ने निवेदन किया कि महाराज मेरे नगर में गेहूं का वृक्ष हाथी के डील से बड़ा होता है। राजा ने यह बात सुन कर हंस दिया। जब वे सिकार खेल कर आये तो मन्त्री ने अपने नगर के लोगों को कई एक पेड़ के लिये चिट्ठी लिखा परन्तु पाती के न पहूंचे तक गेहूं की ऋतु पूरी हो गई थी इसलिये गेहूं का वृक्ष न आसका पर २रे साल कई एक वृक्ष गेहूं के वहां से आये और मन्त्री ने राजाके सामने पहुंचाये, राजा पूछा यह क्या मंगाया है ? मन्त्री ने कहा कि महराज पिछले वर्ष में मैं ने कहा था कि मेरे नगर में गेहूं का वृक्ष हाथी के डील से बड़ा होता है, इस पर आपने हंस दिया मैंने सोचा कि महाराज मेरी बातको झूठ समझते हैं, इस लिये अपनी बात की सचाई के लिये आपके सन्मुख मंगा के

उपस्थित किया है। राजा कहा अब मैं तेरी बात की प्रतीत की परन्तु कभी किसी से ऐसी बात न कहनी चाहिये जो साल भर के पीछे प्रतीत करें।

१२५—एक भिक्षुक अर्थात् भिखारी किसी बनिये की हाट पर गया और सामग्री लेने में उतावली की कि बनिये ने भिखारी को गाली दी। तब तो भिखारी ने क्रोध कर के एक जूती बनिये के सिर पर मारी। बनिये ने कोतवाल के आगे जाकर बिल्कुल समाचार कह सुनाया, कोतवाल ने भिखारी को बुला कर पूछा तूने किस लिये बनिये को मारा है? उस ने कहा बनिये ने मुझे गाली दी इस लिये मारा है। कोतवाल ने कहा रे भिखारी तूने बड़ा भारी अपराध किया, पर तू मंगता है इस लिये तुझे दण्ड से बचाया, जा आठ आना बनिये को दे, तेरे अपराध का यही प्रतिकार है। अतीथ ने अपनी वसनी से एक रुपया निकाल कर कोतवाल को दिया और एक जूती कोतवाल के सिर पर भी मार के कहा, यदि ऐसा ही न्याय है तो आठ आना तू ले और आठ आना उसे दे, कोतवाल तो सुन के चकित हो गया।*

१२६—एक मुसलमान रोगी था उसने अपने नौकर से कहा कि अमुक् वेद्य के पास जाके औषध ला। उसने कहा जो वेद्य जी इस समय घर में न होवें? कहा होवेंगे। तब उसने कहा यदि होवें और औषध न देवें? तब कहा मेरा पत्र ले जा अवश्य देवेंगे। फिर कहा जो उन्होंने औषध भी दें यदि गुण न करे? कहा हे अभागी यहीं बैठा बातें बनाया

करेगा वा जायगा ? बोला, महाराज मैंने माना जो शुण भी करै तो लाभ क्या निदान एक दिन मरना सत्य है जैसा अब मरे तैसा तब यह सुन कर उस ने कहा । ठीक बिहारी सतसई में लिखा है ।

दोहा ।—कैसे छोटे नरन तें, सरत बड़न को काम ।
मढ्यो दमामो जात है, कहीं चूहे के चाम ॥ १ ॥

और तुलसो दास ने भी लिखा है ।

उरग तुरग नारी नृपति, नर नीचो हथियार ।
तुलसी परखत रहब नीत, इनहि न पलटत बार ॥१

१२७—एक मनुष्य ने किसी भिखारी के आगे जा के तीन प्रश्न किये । १ ला प्रश्न यह है कि क्यों तू ऐसा कहता है कि ईश्वर सर्वत्र उपस्थित है, मैं नहीं देखता हूं. मुझे दिखला कहां है ? २ रा प्रश्न यह है कि मनुष्य को अपराध के लिये क्यों दण्ड देता है ? क्योंकि जो कुछ कर्त्ता है सो ईश्वर कर्त्ता है, उस में मनुष्य की कुछ सामर्थ्य नहीं और ईश्वर की इच्छा बिना कुछ कर नहीं सकता है, यदि मनुष्य को सामर्थ्य होती तो सब काम अपने लिये भले करता । ३रा प्रश्न यह है की ईश्वर भूत को नरक की आग से क्यों कर दण्ड दे सकता है ? उस की तो उत्पत्ति आग से है, और आग आग में क्या प्रवेश कर सक्ती है ? जब सब प्रश्न पूरे हुये तो भिखारी ने एक बड़ा सा ढेला उठा के उस के सिर पर मारा और कहा कि तेरे प्रश्नों का उत्तर यही है । तब वह जाकर व्यवस्थापक के पास नालिश की कि मैं अमुक

अर्थात् फलाने भिखारी से तीन प्रश्न किया परन्तु उसने प्रश्न का उत्तर तो नहीं दिया बल्कि उसने एक बड़ा ढेला से मार बैठा अब मेरे सिर में बड़ी चोट लगी है। तब व्यवस्थापक ने उस भिखारी को बुला के कहा कि तूने किस लिये इसके सिर पर ढेला मारा है और इस के प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं दिया? वह बोला उस के प्रश्न का उत्तर ढेला था। वह कहता है कि मुझे सिर में व्यथा है सो देखा सकता है वह व्यथा कहां है, तो मैं ईश्वर को दिखलाऊं। और उसने काहे को आप के आगे री पुकार की? यदि कुछ किया तो ईश्वर ने किया और ईश्वर की इच्छा बिना मैं उसे नहीं मारा क्योंकि मुझे कुछ सामर्थ्य नहीं और उसका जनम माटी से है तो माटी से उसे क्यों कर कष्ट पहुंचेगा? यह सुन कर वह मनुष्य अति लज्जित हुआ और व्यवस्थापक ने भी भिखारी का उत्तर माना।

ठीक किसी ने कहा है। दोहा।

मुख श्रवण दृग नासिका, सबहिं को इकठौर।
कहिबो सुनिबो देखिबो, चतुरन को कछु और।

१२८—एक आदमी एक अमीर के यहां उम्मीदवारी में हाज़िर रहता था। आस उन को बराबर आप विश्वास देते रहे। इसी तरह अरसा गुज़रा। वह बिचारा अपना सब बस खागया। यहां तक की बदन का कपड़ा भी चीथड़ा होगया। पर कुछ काम न मिला एक रोज़ डेवढ़ी पर कोई प्यादा न था हज़रत को अन्दरजाने की ज़रूरत हुई। तो

उसी उम्मीदवार को फ़रमाए कि भाई ! तुम ज़रा डेऊढ़ी की होशियारी रक्खो, मैं आता हूं। इतने में एक पागल नंगा मादरजाद घुस आया। अन्दर महल के चला इस का दिल तो बिगड़ा ही था कुछ न बोला यह अचम्भा देख हज़रत खफ़ा हो के पगले को धकियाते हुए, बाहर आके उम्मीदवार से बोले क्यों ! तूं अन्धा है ? वह हाथ जोड़ के बोला हुजूर मैंने जाना कि यह आप के बाप के वक्त का उम्मीदवार है। क्योंकि मैं आप के वक्त का हूं सो तो कपड़ा लत्ता बेच दिवालिया हो गया तो आपके बाप के वक्त का उम्मीदवार है को नंगा होना क्या अचम्भा है। यह सुनकर बिचारे लज्जित हो गये।

१२८—एक बुड्ढा मनुष्य रस्ता भूल गया, गांव के किसी छोकरे से पूछा कि भो नेकबखत लड़के शहर का कौन रस्ता है, लड़का बहुत चालाक निकला पूछने लगा कि रस्ता तो पीछे बताऊंगा, पहिले आप यह फरमाइये कि आप ने मुझे नेक बखत क्योंकर समझा, बुड्ढे ने कहा अनुमान से, लड़के ने क्या ठीक जवाब दिया कि तो फिर रस्ता भी अनुमान ही से मालूम कर लीजिये।

१३०—किसी एक धोबी ने एक बाबुआन से कहा कि आप दो पैसा दीजिये तो मैं आपके कपड़े मैं धो दे दूं। उस बाबुआन ने हंस कर कहा कि दो पैसा क्या अगर तुम मुझ से एक रुपया लो और धो को दो तो मैं प्रसन्नता पूर्वक दूं।

१३१—एक गंवार का लड़का बीमार था। और उस को दस्त नहीं होता था। वैद्यवर वहां ही बैठे थे। उस गंवार ने

कहा कि यदि इस को दस्त होय तो मैं आपको भोजन करा दूं। इस बात को सुनकर कई एक आदमी जो वहां बैठे थे हंस पड़े और वैद्य बिचारे लज्जित होकर चले गये।

१३२—एक आदमी हाथ में आम उछलाता था। इस में उसका एक मित्र ने कहा कि भाई यह तो आप को नायका का कुच ऐसा मालूम होता है। उस ने हंस कर कहा कि इस का चोभा लगाओगी।

१३३—एक स्त्री ने अपने देवर से कहा कि मैं एक चीज़ देती हूं आप मेरे लड़के को दे देना। उसने कहा कि कौन चीज़ है ज़रा कहो तो। उसने कहा कि पिस्ता है लेते जाओ इस ने कहा जल्द मैं दे भी मेरा भी ललचा रहा है।

१३४—एक कोठीवाल ने आगरा से अपने घर वाले को लिखा कि लाला जी अजमेर गये बड़ी बही को लेते आना। जब यह खत उस के घर पर आया तो (मात्रा न रहने के कारण) लोगोंने पढ़ा कि लाला जी आज मर गये बड़ी बहू को लेते आना।। यह खबर सुनकर लोग बड़े चिन्ता में हुए और तुरन्त बड़ी बहू को आगरे में भेजदिये। वहां पर जाने पर उस ने पूछा कि यह क्या? सभोंनेकहा कि आप ही ने लिखा था कि लाला जी आज मरगये बड़ी बहू को लेते आना सुनकर बिचारे लज्जित हो गये वहां जो लोग बैठे थे सब हंस पड़े।

१३५—एक आदमी ने एक दूकानदार से कहा लिंग पुराण की पोथी है उसने कहा कि है इच्छा होतो लीजिये कई आदमि जो वहां थे हंस दिये बिचारे सुनकर लज्जित होकर चले आये।

१३६—एक आदमी लिफ़ाफ़ा साटने केलिये पानी ढूंढ़ रहथा, २ रे आदमी ने कहा तुम्हारे मुंह में थूक है क्यों नहीं उससे सांट लेते तब उसे ने कहा क्या तुम्हारे मुंह में पेशाब है!

१३७—एक मियां ने एक पण्डित से कहा कि जब तुम लोग पूजा करते हो, सिर उघारे रहते हो और किसी से कुछ बोल चाल नहीं करते अगर उस समय तुम लोगों के माथे पर जूतियां, जड़ी जाय तो क्या करोगे, हिन्दू ने कहा भाई करेंगे क्या चुप चाप महटिआय (बहटिआय) के रह जायेंगे पर ऐसा हो तो तुम लोगों के यहां भी है कि नेमाज़ पढ़ने के लिये जब तुम लोग धोती का पछुआ खोल देते हो अगर उस समह कोई पछुआ खोल दे तो क्या करोगे सुन के बिचारा लज्जित होकर रह गया।

√ १३८—दयानन्दसरस्वतीस्वामी ने एक ब्राह्मण को उपदेश दिया कि तुम दिनभर क्यों शिवलिंग को पूजा करते हो इस से क्या? न लोक बनेगा न पर लोक। उसने कहा कि तब क्या करूं। स्वामी जी ने कहा कि संध्या करो बलिवैश्य यज्ञ करो उस ने कहा कि उस में क्या चहिये स्वामी जीने सब चीज़ें बताई जो बलिवैश्य यज्ञ में चहिये तब इस ने पूछा कि महाराज जी इस से क्या मिलेगा कहा कि लौकिक पार लौकिक इस से सब वस्तु मिलेगी उसने चटपट (झटपट) एक रुपया लाकर सब सामग्री ले आया और कहा कि अब से मैं नित्य संध्या बलि वैश्य यज्ञादिक काम किया करूंगा। और करने लगा। दिन भर इस आशा में बिताया कि अब

कुछ मिलेगा अब कुछ मिलेगा पर जब कुछ न मिला तो स्वामी जी से कहा कि भाई और काम के तो दूर रखिये जितना मैं लगाया था उतना भी न मिला तो इस से तो वही अच्छा था कि जो लगाता था वह तो भोग में आता था ऐसा काम को कौन करे जिस से एक पैसा भी लाभ न हो। इस बात को सुनकर स्वामी जी चुप होगये और वह हंसकर कहा वाह स्वामी जी भला आप को उपदेश है जिस के घर के वस्तु गंवा दिवालिया बने।

√ १३८—वर्ल्ड अखबार का एक कारेस्पाडेन्ट लिखता है कि एक बार पुर्तगाल के दारुस्सलतनत लिज़्बों में किसी त्योहार के मौके पर जब कि वहां के लोग होली के से स्वांग बन २ कर निकलते हैं और हरक़िस्म का मसखरापन करते हैं एक आदमी ने भीड़ में से तुर्की .एलची की गाड़ी पर एक नारंगी फेंक दी जो आकर एलची साहिब के चिहरे पर लगी। एलची साहिब कुछ सोच कर ज़रासी देर के बाद वहां के ग़ैर मुल्की मुआमलों के वज़ीर के पास गये और शिकायत की कि एक आम जगह में हमारी ऐसी बेइ-ज़्ज़ती हुई। वज़ीर ने कहा हज़रत इस मुल्क का दस्तूर है कि ऐसे मौक़ों पर इस क़िस्म की दिल्लगियां करते हैं इस लिये मुझे उमैद है कि आप मुआफ़ फर्मावेंगे"। एलची ने कहा "ठीक है लेकिन आपने मुझे बाक़ी हाल तो कहने ही न दिया यानी इस गुस्ताख़ी पर मैंने फ़ौरन् पिस्तौल निकाल कर उस नक़ल हरामज़ादे को मार डाला क्योंकि हमारे

मुल्क का यही दस्तूर है, और आप ने जो फ़िक़रा अभी कहा है उस के मुताबिक़ मुझे भी यक़ीन है कि आप इस का कुछ ख़याल न करेंगे" ॥

१४०— एक पादरी साहिब किसी स्कूल का इम्तिहान ले रहे थे और एक लड़के से सवाल किया कि "औसत किसे कहते हैं"। लड़के ने जवाब दिया "जिस में मुर्गी हर साल अंडे देती है" पादरी साहिब घबराये। लड़का बोला कि किताब देख लीजिये उस में यही लिखा है, और बड़ी शेख़ी से अपनी किताब खोल कर उन के आगे रखदी जिस में लिखा था "मुर्गी औसत में हर साल ५०० अंडे देती है"।

१४१—एक लड़का किसी हलवाई की दूकान पर गया और चार आने की मिठाई मांगी। हलवाई ने एक हांडी में मिठाई रख कर उस के हवाले की। लड़के ने कहा "वज़न तो कम मालूम होता है।" हलवाई ने हंस कर जवाब दिया "अच्छी बात है तुम्हें बोझ भी तो कम ढोना पड़ेगा"। लड़का यह सुन कर बोला "ठीक कहते हो" और तीन आना हलवाई के सामने फेंक कर चलता हुआ हलवाई पुकारा "पैसे तुम ने कम दिये हैं पूरा दाम देते जाव" जिस पर लड़के ने जवाब दिया "कुछ हरज़ नहीं तुम्हें गिन्ना भी तो कम पड़ेगा"।

१४२—एक शख़्स से किसी दोस्त ने पूछा कि तुम्हारी बीबी का मिज़ाज अब कैसा है। उस ने जवाब दिया "यार कुछ पूछो नहीं बुरी हालत है—मेरी जोरू को तो यह डर है कि मैं मरजाऊंगी और मुझे यह डर है कि वह न मरेगी इस से हम और वह दोनों उदास हैं"।

१४३—एक साहिब सफ़र में किसी होटेल में ठहरे थे। जब चलने लगे तो उन्होंने अपने नौकर से कहा "जूता साफ़ कर दो"। उस ढीठ नौकर ने छूटतेही जबाब दिया "जो हुकुम" पर इस से फ़ायदा क्या ? जूते दो घड़ी में फिर ज्यों के त्यों मैले हो जायंगे"। साहिब उस समय तो चुप रहे पर दूसरे दिन जब होटेल में ठहरे तो होटेल वाले से कह दिया कि नौकर को खाना न दे। जब वह बचा जी खाना मांगने गये और वहां कोरा जवाब पाकर मुंहसामुंह लिये फिर आये तो साहिब से पूछने लगे कि हुजूर आज हमारे खाने की क्यों मनाही हुईहै। साहिब ने मुस्कराकर उत्तर दिया "खानेमे फ़ायदा क्या ? दो घड़ी में फिर भूख लगेगी"। यह सुन बिचारे नौकर जी अपना पित्ता मारकर चुप रह गये, साहिब गाड़ी पर सवार होकर मंज़िल चले और जी बहलाने को कोई किताब देखने लगे। नौकर जी भी जले भुने दुम दबाये पीछे बैठे थे। संयोग से किसी राह चलते ने पूछा "आप लोग कहां जाते हो"। जबतक साहिब बोलें २ आप धड़ से बोल उठे "स्वर्ग को"। इस जवाब पर चौकन्ना होकर राह चलता कहने लगा "भाई स्वर्ग की यह राह नहीं है"। नौकर बोला "अबे पागल हुआ है ? स्वर्ग की यह नहीं तो कौन राह है ? देख हमारे मालिक कथा बांचते जाते हैं और हम व्रत करते जाते हैं तो क्या इतने पर भी स्वर्ग न पहुंचेंगे"॥

१४४—एक भले मानुष ने किसी आदमी के ऊपर पे-जामा चुराने की नालिश की। मुद्दई के कई गवाह थे लेकिन

सबूत की कमजोरी और वकील की होशीयारी से मुद्दआयलैह की सफाई होगई। हाकिम ने उस से कहा कि तुम जासक्ते हो, लेकिन वह न हटा। फिर उस के वकील ने कहा कि तुम्हारी छुट्टी होगई चले जाव, इस पर वह भी अपनी जगह से न हिला। उसवक्त और मुकद्दमे सुने जाने की बाक़ी न थे इस सबब से कचहरी की भीड़ धीरे २ कम हो गई लेकिन इस को वहीं खड़ा देख कर वकील ने चिढ़ कर कहा तुम क्यों नहीं जाते। यह सुन कर उस बेचारे बेगुनाह ने झुककर कान में जबाब दिया कि साहिब असल बात यह है कि हम नहीं चाहते थे कि जब तक गवाह लोग कचहरी से न चले जांय हम यहां से हिलें।

वकील—"किसलिये ?"

मुद्दआयलेह—"इस वास्ते कि वह पैजामा जो मैने चोराया था इस वक्त पहने हूं"।

१४५—एक बार कलकत्ते की हाइकोर्ट के फुलबेंच में विचार हो रहा था। बुड्ढे कौंसिली ककरेल ने हंसकर लोगों से कहा कि आज तीन सो जज इजलास करते हैं। लोगों ने कहा तुम्हें बुढ़भस लगा है कि इस अवस्था में और इस सफेद बाल पर खाली हंसी करने को इतना झूठ बोलते हो। बूढ़ा ककरेल बोला हम न कभी झूठ बोले हैं न बोलेंगे। चीफ़ जस्टिसपीकाक, जस्टिसफ़ेयर और जस्टिस सीटन कार यह तीन वर्त्तमान, और जस्टिकैम्प और जस्टिस ग्लिवर यह दो शून्य (ग़ैरहाजिर) बस तीन सौ जज हुए कि नहीं ? वाह मियां बुड्ढे बिना दांतके मुंह पर यह रसिकता॥

१४६—किसी साहूकार के परोस में एक सैदानी रहती थी और अक्सर उस के घर आया जाया करती थी। पितरपख में एक बार लालाजी के यहां सराध हुआ। उस रोज़ भी इत्तिफ़ाक़ से सैदानी जी उनके घर गईं। बहू बेटियों ने चार पूरियां उस के हाथ पर भी ला धरीं। आपने पूछा "बेटा आज क्या है?" औरतों ने जवाब दिया "सराध"। बीबी सैदानी गोद पसार कर बोलीं "हां—जम जम सराध! लालाजी का सराध! बहू बेटियों का सराध बाल बच्चों का सराध"!

१४७—एक मग़रूर पादरी अपने दोस्तों में कहने लगे "हा आज मुझे कैसे गधों को वाज़ सुनाना पड़ा था!"। एक तेज़तबीअत मेम साहिबा जो वहां मौजूद थीं बोल उठीं "अहा तभी आप उन्हें बार बार मेरे प्यारे भाइयो कह रहे थे"॥

१४८—एक बार एक निहायत बदशकल आदमी जेरल्ड साहिब के साथ कहीं खाने को बैठा दस्तर्ख़ान उठने के पहले इत्तिफ़ाक़न् जेरल्ड साहिब से एक शीशे का बरतन टूटगया जिस पर उस शख़्स ने इन्हें चिढ़ाने के लिये कहा "वाह साहिब आप भी क्या ही शउदरदार हैं—मेरे हाथ से तो आज तक कोई शीशा नहीं टूटा"। जेरल्ड साहिब ने छूटते ही जवाब दिया "बड़े तअज्जुब की बात है कि आप के हाथ से शीशा नहीं टूटा, मै तो समझता था कि जब कभी शीशा आप के चिहरे के सामने आता होगा आप उसे तोड़ डालते होंगे"॥

१४९—किसी ने फ़रासीस के एक आलिम से कहा कि कहवा भी एक तरह का देरअसर ज़हर है। आलिम ने जवाब दिया "आप सच कहते हैं यह बहुत ही देर असर ज़हर है क्योंकि इसे सत्तर बरस तक इस्तेमाल करने पर भी मैं आज तक नहीं मरा हूं"॥

१५०—एक बार बादशाह जार्ज३ जहाज़ के आदमियों की कसरत का तमाशा देख रहे थे। इन में एक लड़का था जो मस्तूल की रस्सियों पर इस तेज़ी के साथ चढ़ता था कि सब लोग हक्के बक्के हो जाते थे। बादशाह उस के करतब से निहायत खुश हुए और लार्ड लोथियन से बोले "लोथिअन हम ने तुम्हारी तेज़ी की बड़ी तारीफ़ सुनी है देखें तो सही तुम इस लड़के के पीछे दौड़ सकते हो"? लार्ड लोथिपन ने जवाब दिया "जहांपनाह गुलाम का काम हुजूर के पीछे दौड़ने का है"॥

१५१—एक साहिब और उन की मेम से नहीं पटती थी। एक रोज़ आया साहिब के पास आई और कहने लगी कि हुजूर रोज़ सुबह से शाम तक मेम साहिबा की झड़की सुनते सुनते नाकों में दम आ गया, मैं मेम साहिबा को इत्तिला दिया चाहती हूं कि मुझ से अब न निबहेगी अपना कोई दूसरा इन्तिज़ाम कर लें। साहिब बोले "आया तू बड़ी खुशनसीब है, मैं चाहता हूं कि मैं भी तेरी तरह इत्तिला दे सकता"॥

१५२—एक बदमाश जो कई बार क़ैद हो चुका था फिर किसी जुर्म में गिरफ्तार होकर फ़रासीस के एक मजिस्ट्रेट के सामने हाज़िर आया। मजिस्ट्रेट ने लानती के

अपनी हर्कतों की बदौलत अदालत में आना पड़ा, अब तुम्हारी इसी में बिह्तरी है कि बुरी सुहबत में वक्त ख़राब करने के बदले मिहनत की आदत डालो"। मुजरिम बोला "बुरी सुहबत! भला आप ऐसा फ़र्माते हैं जब कि आप जानते हैं कि मेरा बहुत ज़ियादा वक्त पुलीस और मजिस्ट्रेटों के दर्मियान सर्फ़ होता है!"

१५३—हाल में बम्बई के हाईकोर्ट में यार्कशायर के एक आदमी का मुकद्दमा पेश था और तरफ़सानी का वकील जिरह के सवालात कर रहा था। वकील ने एक खास सवाल को इस तरह शुरू किया "अच्छा साहिब चूंकि आप एक ईमान्दार साफ़ साफ़ कहने वाले आदमी हैं मैं दर्याफ़्त करता हूं कि—" वह शख़्स निहायत सहूलियत के साथ वकील की बात को काट कर बोल उठा "शायद आप की शान में भी मैं ऐसा ही कहता अगर इस वक़्त मैं हलफ़ पर न होता"। इस फ़िक़रे को सुनकर जज और कुल अदालत के लोग हंसी को मुश्किल से ज़ब्त कर सके और वकील साहिब गुस्से के मारे थर्रा उठे।

१५४—किसी हिन्दुस्तानी रईस के एक नौकर ने अदालत के इज़्हार में अपनी उमर नौ बरस कम लिखवाई। जब उस के मालिक ने मकान पर आकर पूछा कि तुमने इज़्हार में अपनी उम्र कम क्यों लिखवाई तो आप ने जवाब दिया "सर्कार आप को मालूम नहीं? बड़े बाबू साहिब के वक़्त में नौ बरस हुए जब हम गवाही में गये थे तो इतनी ही उमर लिखवाई थी तो अब ज़ियादा लिखवा कर दरोग़हलफ़ी में सात चौदह कौन जाय"।

१५५—राजा बीरबल का बड़ा बेटा संस्कृत का बहुत लाइक़ पण्डित था। राजा बीरबल के मरने पर शाह अकबर ने उस से पूछा "राजा बीरबल के साथ कितनी रानियां सती हुईं ?" उस ने जवाब दिया "सूरता, उदारता, बुद्धि, यह तीन रानियां तो महाराज के साथ सती होगईं, सिर्फ़ एक कीर्ति यहां रह गई"।

१५६—मैकलिन साहिब अपने एक दोस्त के साथ नाच घर में पीछे की किसी क़ितार में बैठे थे कि एक बेहूदा आदमी आगे की सफ़ में ठीक उन के चिहरे के सामने इस तरह खड़ा हो गया कि उन्हें तमाशा कुछ भी नज़र न आने लगा। मैक्लिन साहिब ने इस के कंधे पर हाथ रख कर बहुत शाइस्तगी के साथ दर्ख़ास्त की कि "जब कोई उम्दा तमाशा देखियेगा तो मिहरबानी करके मुझे और मेरे दोस्त को भी इत्तिला दीजियेगा क्योंकि इसवक़्त हम लोगों को आप ही की इनायत का भरोसा है"। इस फ़िक़रे को सुन कर वह भद्दा आदमी खिसिया कर बैठ गया।

१५७—जब कि ब्रेनन आयरलैंड का मशहूर डकैत गिरफ़्तार होकर अदालत में आया तो एक महाजन ने जिस की साख उन दिनों बाज़ार में किसी क़दर कम थी उसे देख कर कहा "अहा! तुम्हें आख़िर को इस जगह पाकर हमें कैसी खुशी हुई है!" ब्रेनन ने उस की तरफ़ निगाह करके जवाब दिया' "साहिब आप की ज़ात से तो मुझे ऐसी उमेद न थी क्योंकि आप को मालूम है कि जिस वक़्त तमाम शहर आप की हुंडियों के लेने से इन्कार करता था मैंने उन्हें ले लिया"।

१५८—एक छोटे यतीम लड़के को उस का कंजूस चचा जो उस का मुहाफ़िज़ था बहुत तङ्ग करता और भूखा रखता था जिस के बाइस से वह निहायत दुबला होगया था। एक रोज़ उन दोनों को एक दुबला शिकारी कुत्ता रास्ते में मिला जिसे देख कर लड़के से उस के चचा ने पूछा "यह कुत्ता इतना दुबला क्यों है?" थोड़े से ग़ौर के बाद उस लड़के ने जवाब दिया "मैं ख़याल करता हूं कि यह कुत्ता शायद अपने चचा के साथ रहता है"॥

१५९—एक बार एक शख़्स ने पाइथागोरस नामी यूनानी फ़िलासोफ़र से पूछा कि उसने अपनी लड़की अपने दुश्मन से क्यों ब्याह दी। पाइथागोरस ने जवाब दिया "मैं उस के हक़ में इस से बढ़ कर कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकता था कि उस के पीछे एक जोरू की बला लगा दूं"॥

१६०—एक बार लड़ाई के वक़्त में स्पार्टा के बादशाह लिआनिडस के पास एक सिपाही ने आकर इत्तिला की कि "दुश्मन की फ़ौज बहुत क़रीब आगई"। इस पर उस जवां-मर्द बादशाह ने जवाब दिया "क्या मुज़ायक़ा उतने ही हम भी उन के क़रीब हो गये"। इसी अर्से में एक दूसरे सिपाही ने आकर लिआनिडस से बयान किया कि "दुश्मन की फ़ौज की तादाद इस क़द्र ज़ियादा है कि उन के गुर्ज़ और बरछी की नोक के आगे सूरज मुश्किल से नज़र आता है" जिस पर उस बहादुर ने मुस्कारा कर जवाब दिया हम लोगों को ख़ुशी करनी चाहिये कि हम लोग आराम से साये में लड़ेंगे"॥

१६१—एक ठौर नाच होता था। शराब (मदिरा) आई सब ने पाई। राम जनी कों भी दी तो उसने कहा कि बंदी आज न पीवेगी एकादशी बर्त्त है। इतने में कोई मुसलमान बोल उठे कि मालूम होता है कि एकादशी हमारे बुजुर्गों की जुरूवा है। क्योंकि जब रमजान शरीफ होती हैं तबभी एकादशी होती है। गरज कहां तक बयान करें हमारे हर त्योहारों में खान खा एकादशी होती है। इसमे साफर जाना जाता है कि एकादशी हमारे बुजुर्गों की जुरूवा है। यह बात सुन जब कोई न बोला तो वह रामजनी ने कहा कि हुजूर गुनाह माफ होय तो बंदी कुछ अर्ज़ करे। जरूर एकादशी आप के बुजूर्गों की जुरूवा थी मगर जब उन के काबू में न आई तो हिन्दू रखने लगे तब से बरा बर हिंदू रखते हैं।

१६२—एक आदमी भांग पीता था। और अपने को बहुत अच्छा असराफ़ लगाता था। एक दिन राज सभा में बहुत लोग इकट्ठे थे। उसी वक्त एक कबूतर बीट कर दिया। राजा ने हुकुम दिया कि भंगी (हलाल खोर) को बोलाओ इसे साफ करे। इतने में भंगेरीने अपनी प्रशंसा करने लगा कि भांग पीने में बहुत गुन है। एक मसखुरा जो वहां बैठा था बोल उठा पृथ्वी नाथ भंगी (मेहतर) तो यहां मौजूद था दूसरे को बुलाने से क्या लाभ। यह सुन कर बिचारे लज्जित हो गये और सब लोग हंस पड़े।

१६३—एक कबि किसी राजा के यहां गया। राजा साहब उस वक्त (समय) डोल डाल (पैखाने) को गये थे कवि ने आकर उन की गद्दी पर बैठ गया। जब राजा

साहिब आये तो कवि जी के देखकर क्रोध से बरने लगे कवि-जी ने पूछा महाराज आप का नाम क्या है । महाराज साहिब क्रोध से भूत होकर बोले "दूर हो ससुर" कवि ने चट बोल उठा आपका नाम तो मालूम हुआ काम क्या है? यथा नाम तथा गुण या और कुछ। यह सुन कर महाराज चुप हो गये ।

१६४—एक कसबी लखनौ से भोजपुर में आई। लोगों ने पूछा कि आप का नाम क्या है ? उस ने कहा अम्बा जान [माता जान] सुन कर एक मसखरा ने कहा चलो हम पूछेंगे यह जाकर पूछा कि बीबीजान आप का नाम क्या है बीबी ने कहा अम्बाजान । फिर इस से पूछा कि आपका इस्म शरीफ़ [नाम] क्या है ? कहा कि मुझे माधव लोग कहते हैं [मा = माता, धव = पति] वह सुन कर बिचारी निहायत लज्जित हो गई ।

१६५—एक आदमी भोजपुर से मगह [मगध] में आया और एक आदमी को स्त्री के पुकारने में सुना कि कौन हगी । इस लफ़्ज़ [शब्द] को याद कर लगा मगहियों को चिढ़ाने । और सब चिढ़ने लगी । एक उद्योगी मगहिया ने इस बात के तलाश के लिये भोजपुर में गया और उसी सख़्स के यहां उतरा । खाने गया तो देखता क्या है कि बकरी चावल खा रही है । यह देख कर भोजपुरिया ने अपनी मा को पुकारा कि इयवा छेर छेर [बकरी बकरी] इस बात का सुन कर मगहिया ने कहा वाह साहिब आप तो खुद इयवा को छेराते हैं । यह सुन कर बिचारा लज्जित

हो गया और उस दिन से 'कौन हगे' का कहना ही छोड़ दिया।

१६६—एक हिन्दू [आर्य्य] सूर्य्य को जल देता था। एक अनार्य्य ने कहा क्या तुम्हारा जल सूर्य्य को पहुंचता है देखो उसी जगह गिरपड़ा यह सुन कर हिन्दू ने कहा "मर मरवा" अनार्य्य ने कहा अरे उल्लू गाली देता है। उसने कहा आप की बहन कहां हम कहां गाली क्यों पहुंचा। अगर गाली पहुंचा तो बेशक मेरा जल सूर्य्ये को पहुंचा। यह सुनकर बिचारे अनार्य्य लज्जित होकर चले आये और उस दिन से इस बात को कहना ही छोड़ दिया।

१६७—एक किसान एक आदमी के यहां गया। सांझ हो चला था। उसने कहा कि कुछ पानी पीने [जलखाने] के लिये मंगाऊं। इस ने कहा नहीं अब तो सांगी का समय होगया जो लोग वहां बैठे थे। इस बात को सुनकर सब लोग हंसपड़े।

१६८—एक हाकिम ने किसी गंवार से पूछा कि तुम्हारी उमर क्या है उस ने जबाब दिया "आठ और चार बीस बरस"। हाकिम ने कहा चार बीस और आठ क्यों नहीं कहता"? गंवार बोला "क्योंकि पहले मैं आठ बरस का हुआ तब चार बीस का"।

१६९—एक छोटा आदमी इस बात को बड़ी शेखी के साथ बयान कर रहाथा कि मुझ से खुद बादशाह ने बात की। किसी ने पूछा कि बादशाह ने तुमसे क्या कहा।। उसने जबाब दिया "बादशाह ने मुझ से फ़र्माया कि राह से हट कर खड़ा हो।"

१७०—सर जार्ज स्टानृन चीन के शहनशाह कौन लांग की एक बड़ी दिल्लगी की तक़रीर अक्सर बयान किया करते थे। इन्हों ने एक बार सर जार्ज स्टानृन से दर्याफ़्त किया कि इंगलिस्तान में हकीमों को देने का क्या तरीक़ा है। सर जार्ज ने वहां का दस्तूर बयान किया जिसे शहन-शाह बड़ी मुश्किल से समझे और तअज्जुब में आकर बोले "ऐं तो कोई अमीर इंगलिसस्तान में तन्दुरुस्त भी रहता है? अब मेरे हकीमों का इन्तिज़ाम सुनो—मेरे यहां चार हकीम नौकर हैं जिन्हें मेरी तन्दुरुस्ती की हिफ़ाजत सपुर्द है इन लोगों को कुछ तन्ख़ाह के तौर पर हफ़्तेवार मिलता है लेकिन जब कभी मैं बीमार पड़ता हूं यह तन्ख़ाह फ़ौ-रन् बंद करदी जाती है और जब तक कि मैं बख़ूबी अच्छा नहीं होता बहाल नहीं की जाती। यक़ीन करो कि इस तद्बीर से मुझे अक्सर बहुत कम दिन तक बीमार रहना पड़ता है"।

१७१—एक मरीज़ ने अपने डाक्टर से आकर बयान किया कि कल रात को जब कि मैं शराबख़ाने से लौट कर घर आता था एक शैतान ने मेरा पीछा किया। डाक्टर ने पूछा कि उस की शकल कैसी थी। इसने जबाब दिया कि गधे कीसी। डाक्टर बोले डरोमत, बेफ़िक्र रहो, मालूम होता है कि तुम रात को नशे में थे और अपनी परछाईं से डरे हो।।

१७२—अमेरिका का एक वकील एक छोटे से लड़की के मुक़द्दमे में बहस कर रहा था और बहस की हालत में बच्चे को रोता हुआ गोद में उठा कर जूरी को दिखलाया

जिस में वह उस पर तर्स खाय। इस का जूरी पर बड़ा असर हुआ। तरफ़सानी के वकील ने यह कैफ़ीयत देख लड़के को चुमकार कर पूछा कि "क्यों रोते हो"। लड़के ने जवाब दिया "यह हमे चुटकी काट रहा है" यह सुन कर सब लोग हंस पड़े और वकील साहिब की उस्तादी खुलगई।

१७३—एक अमीर से दूसरे अमीरने कहा "मेरी समझ में नहीं आता कि आप अपना किस तरह इन्तिज़ाम करते हैं—गोकि मेरी जायदाद आप से जियादा है मगर मैं वैसी फ़रागत के साथ नहीं रह सकता जैसा कि आप रहते हैं।" इस ने जवाब दिया "साहिब मुझे एक आसामी भी तो हाथ लगो है।"— "असामी! यह तो आप ने बड़े तअज्जुब की बात कही, मुझे बिल्कुल खबर नहीं' फ़र्माइये तो वह कौन सी असामी है?"—"आप को मालूम नहीं? मैं खुद अपना करिन्दा और मुन्तज़िम हूं"॥

१७४—कोई शख़्स एक मेम साहिबा की बड़ी तारीफ़ कर रहा था कि आप ने कल के नाटक में फ़लानी औरत की नक़्ल कितनी अच्छी की। मेम साहिबा ने फूल कर जवाब कि सची बात तो यों है कि उस नक़्ल को उमदगी के साथ करने के लिये ज़रूर है कि औरत जवान और हसीन हो। उस शख़्स ने जवाब दिया "तोतो मेम साहिबा आप ने कमाल किया कि एक ग़ैरमुमकिन बात कर दिखाई"।

१७५—एक साहिब किसी घटिया होटल में जाकर उतरे। बावर्ची ने खाना लाकरमेज़ पर चुना। साहिब खाने की शक्ल देखते ही बावर्ची पर बड़े खफ़ा हुए कि नालाइक़

तू मेरे सामने ऐसा गंदा खाना लाया है जिसको बू से दिमाग़ फटा जाता है। बावर्ची ने जवाब दिया "हुजूर इस में मेरा क़ुसूर नहीं है बल्कि तूफ़ान का। साहिब—...ऐं तूफ़ान तो आज कोई भी नहीं आया। बावर्ची—...हुजूर आज नहीं गुलाम उस तूफान का ज़िक्र करता है जो पीछले हफ़्ते के पहले हफ़्ते में आया था" ॥

१७६—एक साहिब बीमार थे और उनकी मेम साहिबा किसी ख़ास दवा के पीने की बावत उन्हें निहायत मुहब्बत के साथ समझा रही थीं कि अगर यह दवा तुम्हें फ़ाइदा न करे मैं अपना मुंह न दिखाऊं। एक डाक्टर साहिब जो वहां मौजूद थे बोल उठे "तो तो आप उसे ज़रूर पी लें क्योंकि एक न एक फ़ाइदा हो ही रहेगा" ॥

१७७—नक़ल है कि लखनऊ के एक अमीर बड़े शराबी थे। एक रोज़ आप नशे में चूर बरामदे में तशरीफ़ रखते थे और नसीरुद्दीन हैदर बादशाह की सवारी ईद की नमाज़ पढ़ने के लिये दर्गाह को जाती थी। जब बादशाह का हाथी हज़रत के बरामदे के नीचे आया तो आप ने ग़ें ग़ें करते हुए आवाज़ दी कि "नौवाब साहिब हाथी बेचोगे" बादशाह यह समझ कर कि यह शख़्स नशे की तरङ्ग में है उस बात को अनसुनी कर गये, मगर हज़रत कब चुप रहते हैं, फिर ललकारा कि "ओ नौवाब हम हाथी और हौदज दोनों के ख़रीदार हैं बेचो दाम खड़े करो"। बादशाह ने एक सर्दार को इशारा किया कि गिरफ़्तार कर लो। हुकम होते फ़ौरन हज़रत की मुशके बंध गईं। रात

भर हवालात में रहे और सुबह जब आप का नशा हिरन हो गया था दर्बार में हाज़िर लाये गये। बादशाह ने देख कर फ़र्माया "कल आप ने जिस हाथी को मय जहाज़ हौदज के पसंद किया था वह हाज़िर है ख़रीदिये, कहिये मोल तोल करूं या वाजिबी दाम कहूं"। अमीर ने निहायत अदब से आंखें नीची करके दबी ज़बान से अर्ज़ किया "जहांपनाह ख़रीदार तो भाग गया। अब मोल तोल किस के लिये होगा, गुलाम तो सिर्फ़ बीच का दल्लाल था"। बादशाह को यह लतीफ़ा पसन्द आया और उस का क़ुसूर मुआफ़ फ़र्माया ॥

१७८—एक भंगड़ गञ्जड़ की बछिया खोगई लगा इधर उधर ढूंढ़ने। कहीं पता न लगा, तो आप एक मैदान में इस अभिप्राय से जा बैठे कि बछिया यहां चरने के लिये आजायगी। रात्रि का समय था अकस्मात् एक धोबी का गधा उधर आनिकला। आप बड़ी खुशी से उस के गले में रस्सी बांधकर चल बेटा! चल बेटा! कहते घरको ले चले। रास्ते में धोबी मिला, तो उसने अपना गधा पहचानकर हल्ला किया। आप क्या फरमाते हैं "हराम जादे! गधा है कि बछिया, गधा होता तो इसके पांवों में थन क्यों होते?"

१७९—एक भंगड़ को कहीं भांग न मिली तो आप रूठकर जंगल में चले गये एक गांव के पास हरी काही से भरा एक तालाब देखा तो मारे खुशी के नाचने लगे। और ईश्वर को धन्यवाद किया कि "या दाता! खूब घुटी घुटाई भांग का तालाब बतला दिया।"

हासबिलास ।

अर्थात्

हंसी, दिल्लगी, पंच, चोज, प्रहसन आदि का एक अपूर्व संग्रह ।

दूसरा भाग ।

गुरु गणपति पत्रधेस पुनि, सुमिरि उदयपुर धीस ।
हास बिलासही रचतहौं, धरि रसिकन पद सीस ॥
मैं बालक सब भांति से, तोहि सब लायक जानि ।
श्री सज्जन महराज को, करौं समर्प्पण आनि ॥

श्रीमन्महाराजाधिराज महिमहेन्द्र यादवार्य्यकुल कमलदिवाकर श्री महेश लिङ्गावतार बिबिध बिरदावली वन्दित १०८श्री महाराणा सज्जन सिंह देव बहादुर जी० सी० एस० आई० के लिये—

'देशी गणितलेचचन्द्रिका' 'चतुरबि...' 'दृष्टान्तबिलास' 'मनोरंजनबिलास' 'नीतिबिलास' 'लेखप्रदीप' 'समा चिकछन्ददीपिका' 'नृपवंशावली' आदि के कर्त्ता

बाबू रामचरित्रसिंह ने

संग्रह किया ।

PRINTED & PUBLISHED BY SAHIB PRASAD SINHA,
KHADGBILAS PRESS, BANKIPORE.

1885

हासबिलास।

दूसरा भग।

१—एक साहब के पैर कुछ छोटे बड़े थे। मोची को आपने हुक्म दिया कि ऐसा ही जूता बना लावे। वह जूता बन कर आया और आप बड़ा छोटे पैर में पहिरने लगे वो खफा होकर बोले कि एक से दूसरा छोटा बनाने को कहा था, उस के बदले दुष्ट ने दूसरे से एक और बड़ा बना दिया।

२—वलायत में एक अन्धे ने अपने गले में यह लिख कर लटका दिया था कि "मैं देख नहीं सकता मुझे अधेला देने में शर्म मत करो ॥

३—सर वालटर स्काट ने एक गरीब मज़दूरे को चार आने मज़दूरी के बदले एक रुपया दिया और हंस कर उसे कहा "देखो हमारे बारह आने तुमारे यहां बाकी रहे" मज़दूर ने आसमान को तरफ़ हाथ उठाया और कहा हुज़ूर को तब तक सलामत रक्खे जब तक कि मैं आप के इस देने से न अदा हूं॥

४—मिस्टर ब्रौन साहब से किसी ने पूछा आप हमेशा मैली टोपी पहन कर बाहर क्यों निकलते हैं। "क्योंकि मुझ से मेम साहब से एक़रार है कि जब तक मैं बढ़ियां टोपी न पहनू मेम साहब मेरे साथ हवा खाने न निकलें"॥

५—मुहम्मद तक़ी बड़े अक़लमन्द थे। कुछ कुछ आप फ़ारसी भी लिख लेते थे और कुछ अपने मज़हब में भी दखल रखते थे। एक बेर आप ने एक मौलवी को जो मसजिद

में रहते थे खत लिखा और लिफ़ाफे पर पता लिखा की "लिफ़ाफा हाज़ा दर शहर फ़लां बर खानए खुदा रसीद: बखिदमत मौलवी फलां बिरसद" डाक वाले ने "खानए खुदा" का मतलब न समझ कर खत लौटा दिया "पता ठीक नहीं खुदा का घर ज़मीन पर नहीं है"।

६—एक सौदागर ने अस्सी बरस की उमर में एक सोलह बरस की औरत से शादी किया रसम अदा करने के लिए अपनी जोरू लेकर गिरजे में गया पादरी साहब बड़े दिल्लगी बाज़ थे, दोनों को देखतेही हंस के बोले हौज़ गिरजा के पूरब तरफ है, साहिब ने खफ़ा हो भौं चढ़ा कर कहा मुझको हौज़ से क्या काम है,पादरी ने जवाब दिया, मैं ने समझा आप इस बच्चे को बापटाइज़ कराने को लाए हैं।

७—एक साहूकार मरते समय अपने पुत्र को तीन उपदेश कर गया, कि (१) कभी धूप में मत चलिये, (२) सदैव मीठा अन्न भोजन कीजियो और (३) उधार देकर कभी मत मांगियो, मूर्ख पुत्र ने इसी प्रकार करना प्रारम्भ किया, सदा धूप के डर से घर में बैठा रहै नित्य नैवे मिठाई खोवा रबड़ी भोजन किया करता और लोगों को ऋण दे देकर चुप हो रहता। इस आचर्ण से कुछ समय में उसका सब धन क्षीण हो गया, तब तो वह घबड़ाया और अपने पिता के एक मित्र के पास जाकर कहने लगा कि पिता की आज्ञा पालन करने में हम नष्ट होगये, इनके उपदेश मान कर घर का सब धन गंवा दिया, अब इस दशा को

पहुंचे हैं कहिये अब क्या करें, जब पिता के उस मित्र ने समझा कि तुम उनके उपदेश का अभिप्राय नहीं समझे अपनी मूर्खता से धन गवां दिया, पहिले उपदेश से उनका अभिप्राय यह है कि प्रातःकाल में दुकान पर जाया करो और संध्या समय घर आया करो जिसमें धूप न लगे और कार्य्य साधन भली भांति हो, और दूसरे से यह प्रयोजन है कि पशु के समान दिन भर भोजन न करते रहो जब अच्छी तरह भूख लगे तब खाओ क्योंकि भूख में सब अन्न मीठा लगता है और तीसरे से यह मतलब है कि जिसको रुपया ऋण दिया जब १८०) का माल रख लिया तब ८०) दिये फिर उससे मांगने का क्या प्रयोजन है, उसको हजार दफ़े जो पड़ेगा तो रुपया ब्याज देकर माल छुड़ा ले जायगा, नहीं तो खैर ० पुत्र ने तब इस प्रकार कुछ दिन अपना आचरण रक्खा और फिर उसका धन ज्यों का त्यों हो गया ॥

८—कोई महाशय चौके में बैठे हुए सूपकार को ललकार रहे थे कि भक्ष्यपदार्थ शीघ्र ला—मारे क्षुधा के आत्मा व्याकुल हो रही है, प्राण तलमलाता है, इतने में देखते क्या हैं कि उन के एक प्राचीन मित्र आ उपस्थित हुए और उधर से सूपकार रसोई लिये प्रस्तुत है, आनंद तो यह कि मित्र भी क्षुधित दृष्टि पड़ते थे और भोजन केवल एक ही मनुष्य लायक रहा, यह खांये तो वह भूखे रह जायं, और जो वह हत्थे लगायें तो ये कुड़कुड़ायें कुछ सोच विचार कर स्वामी ने कहा " क्या यार तुम्हारा खाना आया है ? "

वह भी एक कहते हुए कहते क्या हैं हां, हां, मेरा खाना या गया यह क्या सामने रक्खा हुआ है पर तुम्हारा अभी नहीं आया ॥

९—कोई महाशय जिनको विज्ञान शास्त्र में अधिक गम्य था मार्ग में गमन करते चले जाते थे दैवात् सड़क पर अधिक वर्षा होने के कारण कीचड़ भी था, जो पग सरका तो पीछे गिरे धमाका से, लोगों ने कहा राम २ आप को अधिक चोट आई होगी, कहा नहीं मैंने तो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति की परीक्षा की थी ॥ वाह ।

१०—राजा बीरबल की माता का नाम काली और अकबर बादशाह की माता का नाम न्यामत था, एक दिन रास्ते में चलते हुए अकबर ने एक कुत्ता कुतिया को देख कर कहा कि बीरबल देखो यह कुत्ता काली कुतिया के संग क्या कर रहा है, बीरबल ने उत्तर दिया जहांपनाह यह कुतिया आप के लेखे काली है परन्तु वह कुत्ता उसीको न्यामत समझता है ॥

११—एक मुल्ला लड़कों के लिये मसजिद को चले जाते थे रास्ते में एक मसखरा मिला और कहने लगा मुल्लाजी लड़के लेकर कहां जाते हो, उत्तर दिया भाई इन्हें मसजिद में मेंह बरसने के लिये जाता हूं क्योंकि कुरानशरीफ़ में लिखा है कि बच्चों की दुआ खुदा बहुत शीघ्र स्वीकार करता है मसखरे ने हंस कर उत्तर दिया वाह ! अगर लड़कों की दुआ खुदा के यहां मंजूर हुआ करती तो एक भी मुल्ला जीता न बचता ॥

१२—एक लड़का मकतब के पीछे बैठा कह रहा था मौलवी मर जांय तो अच्छा हो हत्यारा मार २ कर नित्य प्राण लेता है, मौलवी साहब यह सुन कर उसके पास जाकर कहने लगे, भाई ऐसे मत कह यों कह जोकि खुदा करे हमारे बाप मर जांय क्योंकि हम मर जायंगे तो तुम्हारा बाप दूसरा मियां जी तुरन्त ही तुम्हारे पढ़ाने के लिये बैठा देगा परन्तु यदि वह मर जायगा तो तुम्हें अच्छी तरह छुट्टी मिल जायगी ॥

१३—किसी फ़क़ीर ने एक बड़ा अपराध किया, लोग उसे हबशी कोतवाल के पास ले गये, कोतवाल ने आज्ञा दी कि इसका मुंह काला करके नगर में घुमाओ, इस को सुन उस फ़क़ीर ने कहा ऐ कोतवाल मेरा आधा मुंह काला कर नहीं तो सर्वसाधारण मनुष्य को यही भ्रान्ति होगी कि यह हबशी कोतवाल है, कोतवाल इस बात पर हंसा और उसके अपराध को क्षमा किया।

१४—मियां भाई प्रायः आठवें दसवें स्नान किया करते हैं, एक दिन एक महात्मा (मियां) स्नान के हेतु पैजामा आदि उतार केवल एक घुटने तक का लंबा कुर्ता पहिने 'भिश्ती' की बाट जोहते खड़े थे कि इतने मे दासी ने आकर कहा कि 'बीबी'' साहिब से मिलने को फलानी बीबी आई हैं आप नेक मुख को ढांक कर खड़े हूजिये आपने तत्क्षण आज्ञा का प्रतिपालन किया और उसी कुर्ते को जो आपने जंघा तक लटकता था, उठाय अपना मुख ढांप लिया आप भी अफ़ीम का स्वाद लिया करते थे।

१५—एक महात्मा अफ़ीमची रात्रि के समय अफ़ीम के नशे में बैठे झूम रहे थे, कि एक संग चांदनी को देख बोल उठे कि गङ्गाजी बढ़ी चली आती हैं और अर्द्धाङ्गिनी से कहने लगे कि तू पैरना नहीं जानती सो जायघर की कोठरी में घुस जा, मैं तो किसी भांति पैर कर बच जाऊंगा. स्त्री इन्हें नशे में जान अपने काम में लग गयी, और आपने जो चांदनी को बढ़ते देखा, सो झट जिस भांति कोई ऊंचे स्थल से जल में कूदे उसी भांति बेग पूर्व्वक सम भूमि में कूद पड़े, अफ़ीम इस समय खूब ज़ोर किये थी, आप कूदतेही हाथ पैर फेंकने लगे. जब लोगों ने दौड़ कर इन्हें उठाना चाहा, तो आप खड़े हो कहते क्या हैं "वाह साहब वाह" ! जब हम किनारे पर पहुंच गये तब आप सहयता को आये हैं ॥

१६—एक धोबी को भी अफ़ीम का स्वाद मिल गया था ० एक दिन आप का गर्द्दभ खो गया० सो आपने दूसरे दिन अपने जाति मात्र के लोगों को ज्योंनार किया ० जब सब लोगों ने पूछा कि आज कैसी ज्योंनार है, सो आपने उत्तर दिया कि गर्द्दभ के खो जानेके हर्ष, लोगों ने पूछा यहतो हानि का विषयहै ० इसमे क्या हर्ष की बात थी ० आपने कुड़मुड़ा कर कहा० आपलोग कुछ नहीं समझते इससे अधिक हर्ष का और कौन विषय होगा कि मैं गर्द्दभ पर आरूढ़ न था और केवल गर्द्दभही खो गया० भला यदि मैं उसपर आरूढ़ होता तो मैं भी न खोजाता ॥

१७ एक महात्मा अफ़ीमची (मियां) ने अपने देश

में कभी नौकरी न पाय यह बिचार किया कि अब देशा-न्तर में चल द्रव्योपार्जन करें और यह विचार दृढ़ कर अर्द्धां-गिनी से बोले कि देवी ! यहां मेरे सब शत्रु होगये हैं, और जहां मैं नौकरी करता हूं वही मेरा खुचर करते हैं, इससे अब मैं किसी दूसरे देश में जाय कुछ धन संग्रह करूं-गा॰ और शीघ्रही तुमसे फिर मिलूंगा॰ साध्वी ने इनको यह बात सुन बहुत दुःख प्रगट किया, और बहुत मना भी किया कि आप बाहर न जांय॰ यहीं जो कुछ मिले उसमें सन्तो-ष करें, पर महात्मा ने न माना और पूर्व की ओर यात्रा किया॰ पथ में संध्या होने पर आपने "नमाज़" पढ़ने का विचार किया॰ और पश्चिम की ओर फिर कर भूमि पर दुकूल बिछाय, "नमाज़" आरम्भ किया॰ नमाज़ पूरा कर आपने फिर प्रस्थान किया, और यह जाना कि जिस ओर हमारा मुख है उधरही हम जाते थे॰ फिर पश्चिमही दिशा में पदार्पण किया॰ थोड़ी दूर चल कर, कुछ चेतना पाय, चारों ओर निहार, आपने सोचा कि यह तो वैसाही पथ है जिससे हम आये हैं॰ और थोड़ी दूर आगे बढ़ कर, नगर को देख मन में कहने लगे कि यह देश तो हमारेही नगर के समान है॰ यहां भी तो वैसेही मन्दिर बन रहे हैं यहां भी तो वैसेही अफ़ीम गांजे की दुकानें हैं। इसी भांति वि-चार करते जब आप उस मुहल्ले में जहां इनका घर था पहुंचे॰ तो परोसियों के लड़कों को देख कहने लगे हैं यह तो हमारे परोसियों के लड़कोंहीं के समान लड़के हैं, निजा-लय को कहने लगे "हैं यह तो हमारे ही गृह समान

मंदिर है" और जब किसी भांति ढाढ़स कर घरमें पैठे भी, तो स्त्री को देख भी यों हीं बोले "है यह तो हमारी स्त्री के समान स्त्री है" धन्य रे अफ़ीम अब तक आपका संदेह नहीं मिटा था। पर उसी साध्वी ने किसी भांति इनके चित्त में विश्वास उपजाया ॥

१८—एक बनिये का लड़का सरकारी पाठशाला में पढ़ता था, एक दिन उस के पिता ने गुरु जी से आन कर कहा कि महाराज अब इसको छुट्टी दे देओ यह दूकान का काम काज सम्हालेगा और छोटा लड़का पढ़ने आया करेगा गुरु ने कहा भाई इसको हमने लिखा पढ़ा कर होशियार किया है जब हमारे अफ़सर परीक्षा ले जायंगे तब तुम जो चाहे सो इस से काम कराना अभी थोड़े दिन इसे और पढ़ने को आने दो बनिये ने कहा "का साहब इहमें तुहार कौन अकाज है जिउ के बदले जिउ तो हम देवे को तैयार हई" ॥

१९—एक श्रद्धावान पुरुष एकदिन गङ्गास्नान को जाय और प्रोहित से संकल्प करा कर पूछने लगे कि श्री महाराज प्रयाग में किस दिशा की तरफ मुख करके स्नान करने की शास्त्र में विधि लिखी है, ठठोल प्रयागवाल उन्हें ऐसा श्रद्धा-वान देख कर कहने लगा "धर्मावतार यहां सदैव मेला लगा रहता है इस कारण यहां की विधि यही है कि जिधर कपड़े धरे हों उधरही मुख करके स्नान करे नहीं तो बहुत ऐसे वैरागी फिरते रहते हैं कि तुरन्त ही यात्रियों के वस्त्रामोचन कर लेते हैं" ॥

२०—किसी राजा राजेश्वर ने एक विद्वान को निमंत्रण भेजा और साथही यह भी लिख भेजा कि यदि आप को सावकाश न मिले तो अपने किसी शिष्यही को भेज दीजिए। उन्हों ने अपना एक विद्यार्थी भेज दिया, और चलती समय समझा दिया कि राज राजेश्वरों की राज सभा में कोमल वचन और मिष्ठ भाषण व्यवहृत करना अति अवश्य है, छात्र राजसभा में उपस्थित हुआ, राजेश्वर ने प्रश्न किया कि तुम्हारे अध्यपक के यहां किस २ विद्या का पाठ होता है? उत्तर दिया, रूई, रेशम, मखमल, फिर पूछा कि जीविका का क्या रंग है, कहा, लड्डू, पेड़ा, बर्फी? राजेश्वर इन उत्तरों के श्रवण करने से अत्यन्त चकित हुआ और कहने लगा कि यह विक्षिप्त सा मअलूम होता है, अन्त में राजेश्वर ने विद्वान के समीप यह सब प्रश्नोत्तर का वृत्तान्त लिख भेजा, पाठक ने उससे इसका कारण पूछा तो कहा कि आप ही ने तो आज्ञा दी थी कि कोमल वचन और मृदु भाषण पर ध्यान रखना तो मैंने रेशम, रूई, और मखमल से अधिक कोई वस्तु कोमल और लड्डू पेड़ा बर्फी से मीठी नहीं पाई जो कहता, अत: मैंने ऐसा भाषण किया॥

२१—एक भद्र किसी बङ्गाली बाबू को साथ ले टहलने गये, दैवात् उन्हें कहीं एक लता देख पड़ी, पूछा कि बाबू आप लोग लता भी खाते हैं? बाबू ने कहा हां, बड़ी चाह से, आपने कहा तब तो आप लोग लतखोर हैं॥

२२—दो चार भले मानस बैठे थे कि एक अंधे याचक नें पुकारा, "कुछ खाने को दिला" उन्हों ने कहा कौन है,

अंधा, चला जा यहां से, अंधे ने कहा मैं अंधा नहीं हूं अंधे तो आप लोग हैं, क्योंकि मैं यह खूब देखता हूं कि आप लोग मुझे खिला सकते हैं पर आप इतना नहीं देखते कि मुझे खिलाना कितना बड़ा पुण्य है॥

२३—कुछ लोग इकट्ठे हो एक खूंटे को लक्ष्य कर तीर चला रहे थे, और एक रुपये का दाव भी लगा था, पर किसी का तीर नहीं लगता था, एक भिक्षुक आया और कहा कि मुझे तीर दीजे तो मैं भी चलाऊं, किसी ने तीर दे दी उसने जो चलाया तो दैवात् बीच खूंटे में मारा, बस रुपया जीत लिया और चलते समय कहा कि दाता कुछ दिया नहीं, उन्होंने कहा वाह अच्छे ठहरे अभी तो रुपया लिया है और कहते हो कि कुछ दिया नहीं, याचक ने कहा यह तो मैंने भीख मार कर लिया है।

२४—दो चार लोग चौसर खेल रहे थे वहां का भृत्य जो झाड़ू दे रहा था उससे लोगों ने कहा "क्यों बे इतना गर्द क्यों उड़ा रहा है" क्या तूने होरी समझ ली है जो धूरसा उड़ा रहा है, उसने कहा क्यों नहीं, जब कि आप लोग रंग खेल रहे हैं॥

२५—एक महात्मा अफीमची के लोटे की पेंदी में एक छिद्र था, सो जब आप "पाखाने" जांय तो "आबदस्त" लेने से पूर्व ही लोटे का सब जल बह जाय, दो चार दिन ऐसाही क्लेश पाय विचारते २ आप ने यह सिद्धान्त किया कि अब हम पाखाने में जाय पहिले आबदस्त ही ले लिया करेंगे, तब तो पानी बचा रहेगा॥

२६—एक धनिक गाड़ी पर आरूढ़ होकर कहीं चले जाते थे कि संयोग वशतः राह में कुछ अस्वस्थ होगये एक असभ्य परिचित इन के संग में था, जो बारम्बार स्वस्थता का वृत्तान्त पूछ२ कर इन्हें दिक करता और इन को प्रसन्नता में विघ्न डालता था, बिचारे इस की दुष्ट चित्तवृत्ति से अत्यन्त पीड़ित होगये थे कि इसने फिर प्रश्न किया "अब आप का शरीर कैसा है" धनाढ्य ने अपना जी छोड़ाने के लिये उत्तर दिया "महाशय अब मैं बहुत अच्छा हूं और आशा करता हूं कि शेष मार्ग में भी इसी दशा में बना रहूंगा" ॥

२७—एक दिवस का वृत्तान्त है कि सिकन्दर बादशाह एक उन्मत्त के समीप गया और कहा कि तु मुझ से कुछ मांग, मतवाले ने प्रार्थना किया कि मुझे मक्षिका अत्यन्त दुःख देती हैं इन को आज्ञा दीजिये कि मुझे न सतावें, बादशाह ने कहा, ओ उन्मत्त, वह वस्तु मांग जो मेरे वश में है, उसने उत्तर में कहा कि जब आप को मक्खियों पर अधिकार नहीं है तो फिर और क्या मांग ।

२८—अबुल फ़ज़ल बिन् मुबारक वज़ीर आज़म जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह और उर्फ़ी शायर को आपस में दिली दुश्मन रहा करती थी, एक रोज़ अबुलफज़ल घर से बाहर आया और कई एक कुत्ते के बच्चे भी साथ ही लिये, उर्फ़ी ने मसखरेपन से कहा कि "नाम साहब ज़ादगान चीस्त" अबुलफ़ज़ल ने जवाब दिया "उर्फ़ीस्त" फ़िर उर्फ़ी ने कहा "बर शुमा मुबारक ‡ बाद ।

---

* नाम वालिद अबुल फ़ज़ल । ‡ मशहूर है ।

२९—एक आदमी ने सीतला देवी से पूजा कर के वरदान में चढ़ने को घोड़ा मांगा, सीतला ने हंस के कहा अरे मूर्ख जो मैं घोड़ा दूसरे को दे सकती तो आप गधे पर क्यों चढ़ी फिरती ॥

३०– एक मनुष्य किसी नगर में मूर्ख शिरोमणि प्रसिद्ध था किसी अमीर ने उसकी रहस्य की वार्ताओं से प्रसन्न होकर उसे नौकर रक्खा और एक छड़ी यह कह कर उस को दी कि तू इसे अपने पास रख जो कोई तुझको अपने से अधिक मूढ़ जान पड़े उसे यह छड़ी दे देना कतिपय दिवसोपरान्त अमीर रोगग्रस्त हो अत्यन्त अस्वस्थ हुआ और उस मूर्ख अनुचर से कहा कि ले आज मैं तुझ से विदा होता हूं, उस ने पूछा कि वहां से अब फिर आप कब पधारियेगा, अमीर ने उत्तर दिया कि मैं ऐसे लोक को जाता हूं कि जहां से कोई नहीं पलटा। यह सुन कर उस अनुचर ने फिर प्रश्न किया, कि "वहां कोई वासस्थान अपने हेतु बनवाय लिया है" कहा नहीं कुछ डेरा खेमा भेज दिया है, ? कहा नहीं, घोड़ा टट्टू पालकी आदि सवारी भेज दिया है ? कहा नहीं, कहा कुछ खाद्य पानादि की सामग्री भेज दी है ? कहा नहीं, अन्त में उस मूर्ख ने कहा कि जिस स्थल में (संसार) अल्प काल लों वास करना था, वहां कि सब सामग्रियों के प्रतिपादन करने में तो आपने इतना व्यवसाय किया किन्तु जहां सर्वदा रहना है वहां के लिये कुछ भी उपाय न किया, अतः आप से अधिक निर्बुद्धी और मुग्ध अन्यत्र मुझे कौन मिलेगा, यह लकुटी आपही लीजिये।

२१—एक मां अपने अल्प वयष्क बालक को शिक्षा दे रही थी कि बेटा आज का काम कल पर उठा रखना न चाहिए, क्या मअ़लूम कल क्या होनेवाला है, बालक हा-ज़िर जबाबी से बोल उठा कि मां कल के लिये जो मिठाई रक्खी है वह आजही खा लूं ? ॥

२२ - एक बहरा गड़ेरिया जङ्गल में अपनी भेड़ें चराता था॰ दैवो बस की एक 'अच्छी भेड़ खो गई तब उस ने एक लंगड़ी भेड़ की ओर देख कर कहा, कि जो वह मिले तो इसे मैं किसी को भगवान के प्रीत्यर्थ दूंगा॰ इतना कहते ही भेड़ मिली, तब वह लंगड़ी भेड़ का कान पकड़ किसी को देने को ले चला. इस में सीही से एक और बहरा आया, इस ने उससे कहा कि यह भेड़ तू ले, वह बोला राम दोहाई मैं ने इस की टांग नहीं तोड़ी॰ निदान यही कहते २ दो-नों हाकिम के यहां गये, हाकिम भी बहरा था, और अपने घर में किसी से रोस कर बैठा था, इन्हें दूर से आते देख उन्ने अपने जी में जाना कि कदाचित ये उसी का संदेसा लिये आते हैं॰ यह इतना कह अपने घर के भीतर भाग गया कि उस दुष्ट की बात मैं कभी न सुनूंगा ॥

२३—एक बार बादशाह जार्ज ३ ने हानंटूक से पूछा कि तुम तास खेलना जानते हो । उसने जवाब दिया "हजूर मैं तो बादशाह और गुलाम में भी फ़र्क नहीं समझ सकता" ।

२४—किसी जर्नेल ने विजय पाने पर अपनी एक सि-

पाही से पूछा कि तूने इस लड़ाई में कौन सी वीरता की, उसने जवाब दिया कि मैंने शत्रु के एक सिपाहि का पैर काट डाला। जर्नैल ने कहा कि पांव काटने से क्या लाभ हुआ। सिर क्यों न काट लिया। सिपाही एक साथ बोल उठा कि सिर तो उसका पहलेही कटा हुआ था।

३५—एक धनिक दाता अंधों को खैरात दिया करता था, एक दिन किसी और भिक्षुक ने सवाल किया उसने कहा बाबा मैं सिर्फ अंधों को देता हूं कि जो बिचारे देख भाल नहीं सकते प्रश्न कर्त्ता ने कहा कि मुझसे और कौनसा अधिक अन्धा होगा जो ईश्वर का दरबार छोड़ तुझसे मांगने आया हूं।

३६—किसी सभा में एक मनुष्य ने व्याख्यान का प्रत्युत्तर उत्तम रीति से पढ़ा, इसे सुनकर परस्पर में एक मनुष्य दूसरे पुरुष से उस की प्रशंसा करने लगा कि व्याख्यान का उत्तर तो खूब लिखा है, उसने कहा हां, अच्छा तो है पर चुराया हुआ है, कहीं अकस्मात् उस व्याख्यान रचयिता के कर्ण में इस शब्द की धुनि जा पड़ी तो वह अप्रसन्न होकर कहने लगा कि यह क्या बात है जो मुझे चोरी का अपराध लगाते हो, उसने प्रार्थना की और कहा कि क्षमा कीजिए, मैंने जो चोराने का शब्द मुख से निकाला वह मेरा दोष है, क्योंकि यह व्याख्यान मैंने जिस पुस्तक में देखा था अभी तक उसमें वर्त्तमान है।

३७—मार्ग में दो मित्रों से भेंट हुई, एक ने दूसरे को कुशलता पूछी, उसने कहा आप की दया से आज दो दिन

हुए ज्वर ने मुझे अपने पंजे में दबा रक्खा है, उसने कहा मेरे कारण आप को ज्वर नहीं आया है जो आप मेरो दया बताते हैं, इसका कारण तो कोई दूसरा ही है ॥

३८—एक अमोर घोड़े पर सवार हो दौड़ाता हुआ बाज़ार में चला जाता था और बहुत से सवार पोछे२ उसकी अर्दलो में थे, एक गंवार ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और चुप हो रहा, अकस्मात् पांच चार दिन के उपरान्त फिर उस अमीर को मय उस के अर्दली के सवारों के पूर्ववत् घोड़ा फेंकते हुए देखा। तब तो अति विस्मित हो कहने लगा, ओफ़ओ, इतने दिन से ये सवार इसके पीछे पड़े हुए हैं अब तक पकड़ा नहीं जाता ॥

३९—एक हिन्दुस्तानो अनुभव कर्त्ता ने किसी मेवे बेचने वाले मोग़ल से पूछा कि काबुल में अमोर शेर अली ख़ां शासनकर्त्ता है या आज़म ख़ां, उसने कहा मअ़लूम नहीं, फिर पूछा कि हिरात इरानियों ने विजय कर लिया या नहीं? पुन: जिज्ञासा किया कि रूसी कहां तक पहुंच गये हैं? कहा नहीं मअ़लूम, तब तो प्रश्न कर्त्ता रुष्ट हो कहने लगा "तुम कुछ भी जानते हो या नहीं" उसने कहा मैं तो गदहा हांकना जानता हूं ॥

४०—किसी बड़े मोंछवाले रईस ने मोंछों पर ताव देकर एक अपने दोस्त से कहा कि देखो यह बड़ी२ और फूली२ मोंछें मेरे चेहरे पर कैसो सोभती हैं, उसने कहा ऐसा जान पड़ता है कि तुम दो गिलहरियां पकड़ कर निगलते हो, एक को पोंछ इस ओर और दूसरे की उस ओर।

४१—लोगों ने एक नीतिज्ञ की प्रशंसा कियो कि बिचारे का स्वभाव है कि न वह किसी से मिलें, न बोलें, एक हंसोड़ ने उत्तर दिया कि हां जब बिवाह में कन्या के साथ दूध भात भोजन किया था तब लोगों ने हठात् उनको अपने स्त्री से बोला दिया था, तदुपरान्त फिर तो कभी भी वह अपने स्त्री से मिले न बोले॥

४२—एक अमीर एक दिन एक वकील के स्थान पर गया वकील अपनी बैठक में अंगीठी में बहुत तेज़ अग्नि जलाये हुए हाथ ताप रहा था, अमीर ने यह देख कर कहा कि "भाई आप इतनी तेज़ अग्नि क्यों बाले हुए हो' वकील ने उत्तर दिया "इस कारण साहब कि मैं यहांही अपनी रोटी बनाता हूं।

४३—लार्ड वाशिनगटन का सेक्रिटरी एक दिन नियत समय से कुछ देर करके आया, लार्ड साहिब ने जब उन्हें देर करने के कारण कुछ कहा तो उसने कहा कि 'साहब यह मेरी घड़ी के सुस्त चलने का दोष है" तब लारड साहब ने मुस्कुरा कर बड़े शान्ति स्वभाव से कहा "भाई इस देरी के दूर करने का एक ही उपाय है कि या तो तुम अपनी घड़ी बदल डालो या अपनी सेक्रिटरी"।

४४—लार्ड वेलिंगटन जब अमेरिका की फ़ौज़ों के कमाण्डर इनचीफ़ थे, एक दिन साधारण वस्त्र पहिने हुए कुछ काम को जा रहे थे, रास्ते में देखा कि एक छोटे पद का सैनिक अफ़सर मोरचे पर अपने सिपाहियों से खड़ा हुआ एक कुन्दा चलवा रहा है, सिपाही बहुत बल कर रहे हैं